बालक अम्बेडकर



शेष साहित्य प्रकाशन

30/64 गली नं० 6 विश्वास नगर शाहदरा दिल्ली-32

बालक अम्बेडकर

धर्मवीर

लेखक

प्रकाशक शोध साहित्य प्रकाशन,
30/64, गली न० 8, विश्वास नगर,
शाहदरा, दिल्ली-110032

मूल्य 35.00

आवरण मदन पाल

दूसरा संस्करण 1990

पुस्तक बन्ध गौतम बुक बाइन्डर्स,
शाहदरा, दिल्ली 32

मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

BALAK AMBEDKAR by Dharam Veer Rs 35.00

भूमिका

हमारे देश मे अनेक महा पुरुप हुए हैं। इनमे डॉक्टर अम्बेडकर की जीवनी की यह विशेपता है कि यह गरीबो और अछूतो के बच्चो को प्रेरणा देती है। उनकी कहानी समाज के सामने चुनौती बन कर आती है। वे आग के खिले हुए फूल थे। उनसे पहले इस परम्परा मे शम्बूक, एकलव्य और रैदास हो चुके हैं।

यह पता चलता है कि डॉ० अम्बेडकर अपनी जीवनी लिखना चाहते थे। उनके मित्रो और उनके अनुयायियो को इसकी बहुत आवश्यकता थी। वास्तव मे अम्बेडकर की जीवनी लिखने के एक मात्र अधिकारी स्वय डॉ० अम्बेडकर थे। लेकिन वे उसे आरम्भ भी नही कर सके थे कि उनका असामयिक निधन हो गया था।

जो लेखक स्वय अपनी आत्मकथा लिखते है वे भी उसमे सभी कुछ नही लिखते। बहुत सारी घटनाओ को वे फिजूल की समझ कर छोड देते हैं। साहित्य की अन्य विधाओ की तरह जीवनी लेखन का भी एक उद्देश्य हुआ करता है। यदि हम किसी महा पुरुप के जीवन की मूल धारा को समझ ले तो यही महत्व की बात हैं।

अम्बेडकर का राजनीतिक जीवन आरम्भ होने के बाद घटनाओ के रूप मे हमे सभी कुछ मिल जाता है। उनके चिन्तन को समझने के लिए उनका विपुल साहित्य उपलब्ध है। उनके जीवन का जो ज्यादा अनजाना पक्ष है वह उनका बचपन और उनकी पारिवारिक स्थिति का है। इस पुस्तक मे मैंने उनके बचपन के बारे मे जानने की चेष्टा की है। इसके लिए, उनके बारे मे जो लिखी हुई जीवनियाँ उपलब्ध है उनसे सहायता ली गई है।

भापा की दृष्टि से इस पुस्तक को बच्चो के लिए लिखा गया है—पर इसे उनके माता-पिता भी पढें तो अच्छा रहेगा।

मैं केवल अपनी वात कहूँ—वावा साहेब पर इससे अच्छी वाल रामायण मैं नही लिख सकता था। कभी अवसर मिला तो उनके परिवार के वारे मे लिखूगा।

और ऐसा नही है कि छपने से पूर्व मैंने इस पुस्तक का वावा साहेब के भक्ता को नही दिखाया ह—उनके एक वहुत बडे भक्त मैंने इसे खुद को दिखाया है। मुझमे घमण्ड घर न कर जाए—इसलिए मेरी चाह है कि इस पुस्तक को पढ कर वावा साहेव के मुझसे अच्छे भक्त पैदा हो।

मुझसे फिर गलती होने की समावना है—इसलिए अपनी वात स्पष्ट कर दू—वावा साहेव को इस वात से प्रसन्नता नही होगी कि हम उनके भक्त वनें—वे यही चाहते हागे कि हम उनकी तरह अपने युग की समस्याआ के समाधान मे नए नए ढग से सोचने वाले मनुष्य वने।

अम्वेडकर निर्वाण दिवस,
6 दिसम्वर, 1988

—धमवीर

अनुक्रम

अध्याय—1

उन्नीसवी शताब्दी

यह उनीसवी शताब्दी का समय था। उस समय हमारे देश मे पढाई-लिखाई का प्रचार नही था। माता-पिता अपने बच्चो को स्कूल नही भेजते थे। ज्ञान-ध्यान के मामले मे हमारी बहुत दुदशा थी। उस समय ब्राह्मणा के बच्चो का भी कमकाण्ड की जरूरत के लिए सस्कृत के थोडे से पुराने श्लोक रटवाए जाते थे। वे बडे होकर झूठमूठ के सस्कार कर दिया करते थे। सच मे उन्हे दीन दुनिया का कुछ भी नही आता था।

सिपाहियो का पढाने लिखाने की आवश्यकता नही समझी जाती थी। उनके बच्चे वणमाला भी नही जानते थे। व्यापारियो के बच्चे अपनी अलग मुडी लिखते थे। वे सब छोटे बनिये हो गए थे। उन्हे अपने व्यापार का देश विदेश मे बढाने की चिन्ता नही थी। उनके बच्चे बडे होकर पडोसियो को हल्दी-मिच बेचने मे लगे रहते थे। ज्यादा से ज्यादा उनका जेवर गिरवी रखकर उन्ह लूटते रहते थे।

लडकियो को एकदम निपट निरक्षर रखा जाता था। उन्हे किसी गुरुकुल या स्कूल मे भेजने की परम्परा नही थी।

सबसे अधिक दुदशा मजदूर और मेहनतकश लोगो की थी। उन्हे शूद्र और अछूत कहा जाता था। दूसरी जातियो के लोगो में आलस्य और अज्ञान के कारण शिक्षा की परम्परा नही रह गई थी लेकिन इन जातियो को पढने-लिखने की धमग्रन्थो मे मनाही थी। इनके बच्चो की पढाई को जबरन रोका जाता था।

यह बहुत बुरी बात थी कि बच्चो को स्कूल भेजने की बजाय उन्ह स्कूल जाने से रोका जाता था। यदि कोई अछूत अपने बच्चे को स्कल

भेजने की कोशिश करता था तो उसे और उसके बच्चे को बहुत मारा-पीटा जाता था। उस समय के ब्राह्मण न खुद पढते थे और न दूसरो को पढने देते थे। यही कारण था कि तब हमारा देश अग्रेजो का गुलाम बना हुआ था।

तब हमारा देश अग्रेजो का गुलाम न होता तो किसी और जाति का गुलाम होता। सच्ची बात यह थी कि उस हालत मे इसे गुलाम होना ही था। उससे पहले यह अन्य देशो की कई जातियो का गुलाम रह चुका था।

तब इस देश के हिन्दू, मुसलमान, सिख और ईसाई सब गुलाम थे। देशी मुसलमानो पर विदेशी मुसलमानो का राज था। भारतीय ईसाइयो पर यूरोप के ईसाइयो का दमन चलता था।

फिर समय ने पलटा खाया। लम्बी दासता से तग हो कर हमारे देश मे जागरण का समय आया। तब देश के हर कोने मे ऐसे बच्चो ने जन्म लिया जो महान कहलाए। इस नए वातावरण मे ब्राह्मणो के घरो मे पढाई-लिखाई शुरू होने लगी। राजाओ के बच्चे भी विदेश मे पढने लगे थे। व्यापारियो को स्कूल जाने की ललक हो गई थी। पर औरतो, शूद्रो और अछूतो की पढाई-लिखाई अब भी नही होती थी।

इसी समय अग्रेजो की एक ईस्ट इडिया कम्पनी थी। इस कम्पनी ने महारो को अपनी सेना मे भर्ती किया था। यह भर्ती महारो के लिए वरदान सिद्ध हो रही थी।

इस कम्पनी का एक अच्छा नियम यह था कि उसकी सेना मे जो लोग काम करते थे उनके बच्चो को जरूरी तौर पर शिक्षा दी जाती थी। सैनिक टुकडियो के साथ हर जगह उसने स्कूल खडे किए थे। इससे महारो को पढने-लिखने के अवसर प्राप्त हुए और उनके बच्चे आगे बढ सके। सयोग से अम्बेडकर के पिता और दादा तथा मामा और नाना—सब इसी ईस्ट इडिया कम्पनी की फौज मे काम कर चुके थे।

बालक अम्बेडकर का जन्म इसी माहौल मे हुआ था। उसकी मातृभाषा मराठी थी। उसका परिवार महाराष्ट्र का रहने वाला था। उसकी जाति का नाम महार था। महारो की जाति गाँव से बाहर रहती थी। उस बस्ती को 'महारवाडा' कहते थे। महारवाडे का

मतलब गन्दी बस्ती से था। महारो को सवर्ण हिन्दू छूते नही थे।

अम्बेडकर का जन्म इन्दौर के पास महु छावनी मे हुआ था। यह स्थान आज के मध्य प्रदेश मे स्थित है। यह हमारे देश के इतिहास के लिए 14 अप्रैल, सन 1891 का शुभ दिन था।

अम्बेडकर अपने माता-पिता की सबसे छोटी सन्तान था। वह अपने माता-पिता का चौदहवाँ बालक था। कभी-कभी वह खुश हो कर अपने आपको अपने माता-पिता का चौदहवाँ रत्न कहा करता था। यह बात सच भी थी। उसने इस बात को अपने जीवन मे सार्थक कर दिखाया था।

अम्बेडकर गरीब घर मे जन्मा था लेकिन गरीब घर से भी अधिक वह एक गरीब कौम मे जन्मा था। गरीब घर की बात पैसे की तगी की होती है लेकिन गरीब कौम की बात मानसिक हीनता की होती है जो धरती पर मनुष्य के जन्म की सबसे बडी गिरावट है।

अध्याय—2

अम्बेडकर का नाम

अम्बडकर का पूरा नाम भीमराव रामजीराव अम्बडकर था। य तीना शब्द—भीम, रामजी और अम्बेडकर—अपने पीछे अपनी कहानिया लिए हुए ह। उमकी माता का नाम भीमा बाई था। उमकी माता के उसी नाम मे उमके नाम मे 'भीम' शब्द लिया गया था। उमके पिता का नाम रामजीराव था। इम्मे उसके नाम मे 'रामजी' शब्द लिया गया। इस प्रकार उमके माता पिता के नामो को आगे पीछे जोड कर ही उमका नाम रखा गया था। उमकी माता और बुआ उसे प्यार मे 'भिवा' पुकारा करती थी।

'अम्बेडकर' शब्द की अपनी अलग कहानी है।

महाराष्ट्र मे ज्यादातर उपनाम गॉव क हिसाब से रखे जाते है। जा जिस गाव का रहने वाला हाता ह उमी गॉव के नाम के साथ 'कर' लगा कर उमका उपनाम बनाया जाता है। मराठी मे 'कर' का मतलब वही हाता है जो हिन्दी मे 'वाला' का होता है।

अम्बेडकर के गॉव का नाम अम्बावडे था। इसलिए प्राइमरी स्कूल मे दाखिला दिलाते समय उसके पिताजी ने उसका उपनाम 'अम्बावडेकर' लिखवाया था। बहुत दिनो तक उसका यही उपनाम चलता रहा।

यह हाई स्कूल की बात थी। भीम के एक ब्राह्मण प्राध्यापक थ। उनका उपनाम अम्बेडकर था। व भीम को बहुत चाहते थ। उन्होने ही अम्बडकर को अपना उपनाम दिया था।

भीम को बीच की छुट्टी मे खाना खाने के लिए घर आना पडता

था। लेकिन वह इस बात से खुश था। इतने समय के लिए उसे स्कूल से बाहर घूमने का मौका मिल जाता था। लेकिन उनके अम्बेडकर नाम के ब्राह्मण अध्यापक को यह बात पसन्द नहीं आती थी। इसके लिए अध्यापक ने बीच की छुट्टी में भीम को घर न जाने देने के लिए एक उपाय खोज निकाला। वे अपने निज घर से साग, सब्जी, रोटी और चावल अधिक लाने लगे। उसी में से वे भीम को खाने को दे देते थे। सामाजिक संस्कारों से बंधे रहकर वे छुआछूत का बरतते हुए भोजन को भीम के हाथों में दूर से डालते थे लेकिन उसमें फिर भी एक मिठास होती थी।

हुआ यों कि उन प्राध्यापक को 'अम्बावडेकर' शब्द बोलने में बड़ा अटपटा लगता था। यह उनकी जबान पर नहीं चढ़ता था। इसलिए उन्होंने भीमराव को अपना उपनाम 'अम्बेडकर' दे दिया और यही नाम हाईस्कूल के रजिस्टर में दर्ज कर दिया। यह एकदम नई बात थी कि एक ब्राह्मण शिक्षक उस समय एक अछूत बालक को इतना प्यार और दुलार दे कि उसे अपना उपनाम तक दे दे। इसका कारण यह भी हो सकता है कि बालक भीम स्वयं बहुत अनुशासित और मेधावी छात्र था।

बड़ा होकर अम्बेडकर अपने इन ब्राह्मण प्राध्यापक को प्रायः याद किया करता था। उसकी इस याद में उनके प्रति बहुत सम्मान जुड़ा होता था। ये प्राध्यापक भी अपने शिष्य की महानता पर बहुत गर्व किया करते थे। जब अम्बेडकर डाक्टर अम्बेडकर बन कर इंग्लैंड में हो रही पहली गोलमेज सभा में सम्मिलित होने के लिए जा रहा था तो इन बूढ़े प्राध्यापक ने उसे हार्दिक बधाइयां का एक पत्र लिख कर भेजा था। वह उस पत्र को अपने पास बहुत सजोकर रखता था। यह उसके लिए प्रेरणादायक पत्र था। यह उसके जीवन की महान सम्पत्ति थी।

उसके इस 'अम्बेडकर' नाम ने उस समय कई लोगों को भ्रम में भी डाल दिया था। यह यहाँ तक हुआ कि महात्मा गांधी भी शुरू में यह नहीं समझ सके थे कि यह किसी अछूत का नाम है। पहली बार के सम्पर्क में उन्होंने अम्बेडकर को कोई ब्राह्मण युवक समझा था।

अध्याय –3

घर मे कबीर

उन दिना अछूना का मन्दिरो म प्रवश करन की इजाजत नही थी। वे किसी धार्मिक ग्रन्थ को भी नहीं पढ सकते थे। उन्हे धम ग्रन्थ की सस्कृत भापा पढने की मनाही थी। जो सस्कृत भापा को जानते थे उन सवर्णों से अछूतो का मिलना-जुलना भी बन्द था। यह अलगाव इतना अधिक था कि अछूनो की मन्दिरो, धम ग्रन्थो और सवर्णो पर छाया भी नही पडने दी जाती थी।

धर्म के बराबर-बराबर हमारे देश मे अछूत जातियो की एक दूसरी धारा बह रही थी। इस धारा को लोक भापाओ मे अभिव्यक्ति दी जाती थी। जहा धार्मिक लोग जात पाँत को मानते थे वहा दूसरी धारा के लोग जात पाँत और छुआछूत को नही मानते थे। समाज के सिवा अछूतो का सृष्टि से भी सीधा सम्पक था इसलिए उनका सृष्टि के बारे मे अपना अलग विचार था। अधिकतर उन्होने अपने लिए निर्गुण और एक ईश्वर-वाद की खोज की थी। कबीर पथ भी ऐसा ही निर्गुण सम्प्रदाय का एक मत था। भीम के पिताजी इसी कबीर पथ के अनुयायी थे।

भीम की माता भीमा बाई भी कबीर पथी थी। वे अपने मायके मे इसी पथ की पवित्रता मे पली थी। उन्हे कबीरदास के बहुत सारे दोहे और भजन कठस्थ थे।

रामजी सूबेदार ने अपने घर का भरपूर विकास करना चाहा था। वे इस बात के लिए सजग थे कि उनके बच्चो के मन मे पढने का शौक पैदा हो। वे अपने बच्चो का भविष्य उज्ज्वल देखना चाहते थे। इस

बात का हमेशा ध्यान रखते थे कि उनका कोई बच्चा आलस्य और प्रमाद के दुर्गुणो का शिकार न हो जाए। उनके सामने उनका एक भी बच्चा लापरवाही नही बरत सकता था।

रामजी सकपाल अपने बच्चो से रोज भजन पाठ करवाया करते थे। उन्होंने यह नियम बना रखा था कि घर का कोई भी सदस्य बिना भजन के भोजन नही करेगा।

भीम भजन के मामले मे हमेशा टालमटोल किया करता था। उसने भोजन की वजह से एकाध भजन याद कर रखा था। वह उसे अधूरा और उल्टा-सुल्टा गा कर जल्दी थाल पर आ बैठता था। पिताजी पूछते—"क्या आज भजन जल्दी पूरा हो गया ?" भीम इसका उत्तर देने के बजाय इधर-उधर निकल जाया करता था।

ऐसी गडबडी सुबह के भजन मे ही चल सकती थी। शाम को भजन से बचने का कोई रास्ता नही था। इस समय उसके पिताजी किसी की नही सुनते थे। रात आठ बजे उनके पाचो बच्चो को पूजा के स्थान मे जाना ही पडता था। यदि उस समय कोई बच्चा पूजा-स्थल मे नहीं दीखा तो वे उसे माफ नही करते थे।

रामजी सकपाल कबीर के भजनो को स्वय बहुत अच्छी धुन मे गाया करते थे। उनके गाते समय पूरा वातावरण गम्भीर और पवित्र हो जाया करता था। भीम की दोनो बडी बहने भी अपनी मीठी आवाज मे भजन गाया करती थी। उनकी मीठी आवाज भीम के कानो को बहुत सुख पहुँचाया करती थी।

सन्त परम्परा के इस वातावरण का भीम के बालक मन पर बहुत गहरा प्रभाव पडा था। बचपन मे सीखे गए कबीर के जाति विरोध से उसे अपने बाद के जीवन मे छुआछूत से लडने मे बहुत मदद मिलती थी।

अध्याय—4

स्कूल मे दाखिला

भीम के जन्म के तीन वर्ष बाद सन् 1894 मे भीम के पिता रामजी सुबेदार सेना से सेवा-निवृत्त हो गए थे। उन्हे 50 रुपया प्रति माह पेंशन मिलती थी।

कम आमदनी के कारण वे अपने पुश्तैनी गाव अबावडे के पास दापोली मे चले गए। लेकिन वहाँ बच्चो की पढाई लिखाई का प्रबन्ध नही हो सकता था। इसलिए वे अपने पूरे परिवार को बम्बई ले गए। लेकिन बम्बई शहर मे 50 रुपये मासिक पेंशन से घर का खर्च नही चलता था। इसके लिए उन्होंने नौकरी की तलाश की। उन्हे बम्बई के बजाय सतारा मे सार्वजनिक निर्माण विभाग मे स्टोर कीपर की नौकरी मिली। तब वे परिवार को सतारा ले गए।

अब भीम बडा होता जा रहा था। वह एक बहुत ही चुस्त और फुर्तीला बालक था। वह हमेशा कुछ-न-कुछ करता रहता था। रामजी सूबेदार के घर के पास दस-पन्द्रह महार पेंशनरो के परिवार थे। भीम उनके बच्चो के साथ तरह-तरह के खेल खेला करता था। मुसीबत यह थी कि भीम खेल खेल मे दूसरे बच्चो से झगड पडता था। उसे खेल मे रोटबाजी पसन्द नही थी। शरीर से वह महाभारत का भीम ही था। जिससे उसकी बात नही बनती थी उसे पीट देता था। इससे उसके घर पर शिकायत आती थी। माँ-बाप उसकी रोज-रोज की शिकायतो से तग थे।

भीम का तब तक पढाई-लिखाई का विशेष काम नही था। वह अपना अधिकाश समय दूसरे लडको के साथ खेलने मे और गडबडी

हाने पर उनसे लडने मे थिता देता था। उधर सवर्णों के वच्चे स्कूल जाया करते थे। भीम उन्हें देखा करता था। भीम के मन मे आया करता था कि वह भी उन वच्चो की तरह बस्ता बाँध कर स्कूल जाया करे। यह बात वह अपने पिताजी से कई बार कह चुका था कि उसे भी स्कूल भेजा जाए।

रामजी सकपाल जानते थे कि भीम की चाह असम्भव बात की है। यह उसकी चाद के खिलौने को प्राप्त करने की-सी बात है। उसे सवर्णो के स्कूल मे दाखिला नही मिल सकता था।

रामजी सकपाल ऐसे समय क्या करते। वे भीम को घर पर रोज पढाया करते थे पर उससे बच्चे की सहपाठियो के साथ पढने की भूख शान्त नही होती थी।

सोचते-समझते एक दिन रामजी सकपाल एक सैनिक अधिकारी के पास गए। उन्होने सैनिक अधिकारी से कहा—"मैंने 25 वर्ष सरकार की जी-जान से सेवा की है। मैं सरकार मे रहता तो मेरे बच्चो को सैनिक स्कूल मे दाखिला मिलता। लेकिन अब एक रिटायर और बूढा फौजी हूँ। अपने बच्चो की पढाई के लिए मैं कहा जाऊँ? बाहर के स्कूलो में अछूतपन के कारण उन्हे दाखिला नही मिल रहा है। कृपया आप मेरी सहायता करिए।"

सैनिक अधिकारी ने रामजी सकपाल की करुण पुकार सुन कर उनके बच्चो को सतारा के कैम्प स्कूल मे दाखिला दिलवा दिया। भीम और उसके बडे भाई आनन्दराव दोनो इस स्कूल मे जाने लगे।

अध्याय—5

क्रिकेट का खेल

भीम के लिए स्कूल का वही अर्थ नही था जो अन्य सवर्ण वर्गों के बच्चा के लिए था। भीम के लिए वह स्कूल वर्ग और जाति-पाँति का अखाडा अधिक बना हुआ था। असल मे यहाँ उसका एक ऐसे राक्षस से सामना हुआ जिसे मारने के लिए उसे जीवन भर मल्ल युद्ध करना पडा।

भीम के पिता रामजी सूबेदार सेना के एक बहुत चुस्त आदमी रह चुके थे। वे सैनिक जीवन के हर क्षेत्र मे सक्रिय रहे थे। उन्होंने वहाँ सभी गतिविधियो मे भाग लिया था जिनमे से एक खेल-कूद की भी थी।

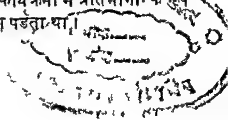
उनके सबसे प्रिय खेल क्रिकेट और फुटबाल के थे। अपने रिटायर जीवन मे उन्होंने भीम को भी इन खेलो मे लगाया। वे भीम के लिए क्रिकेट का सारा सामान—ग्लाउज, विकेट, बेल्स, कैप, बेट, बाल, पैड, जूते, कपडे—खरीद कर लाए।

भीम दूसरे महार पेंशनरो के हमउम्र बच्चो के साथ क्रिकेट खेला करता था। भीम ने इस खेल मे तेजी से प्रगति की। जल्दी ही वह अपनी टीम का कप्तान बन गया।

भीम के स्कूल मे भी क्रिकेट के खेल की सुविधा थी। उसने टीम मे सम्मिलित होने के लिए अपना नाम दिया। लेकिन स्पोर्ट्स के मास्टर के अनुसार, उसे स्कूल मे पढने की अनुमति मिल गई थी तो इसका मतलब यह नही हो गया था कि वह सवर्ण बच्चों के साथ हिल-

मिलन भी लगे।

जव स्कूल मे क्रिकेट का खेल चलता था भीम उसे मन मसोस कर देखा करता था। उसे छात्रो के ऐसे कई कार्यक्रमो मे प्रतियोगी के रूप मे नही वल्कि केवल दृष्टा बन कर रहना पडता था।



अध्याय—6

जहर के घूँट

छुआछूत के राक्षस के कारण भीम को स्कूल मे अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता था। अधिकाश उसे ऐसा लगता था कि वह स्कूल मे पढने के बजाय अपमान सहने जाया करता है।

स्कूल मे डेस्क और बेंचो का प्रबन्ध था। सवर्णों के बच्चे उन पर गौरव से बैठते थे। भीम और उसके बडे भाई आनन्दराव को उन पर बैठने की मनाही थी। ये दोनो बच्चे नीचे जमीन पर बैठते थे। नीचे किसी टाट का प्रबन्ध भी नही था। ये बच्चे खुद अपने घर से बोरी या टाट का टुकडा ले जाया करते थे।

कक्षा मे भीम इस बात मे बहुत परेशान रहने लगा कि हिन्दुओ के बच्चे उसे अछूत मानते है। यदि उसे कोई पढाई-लिखाई मे चिढाता तो वह उससे शुद्ध भाषा बोल कर नीचा दिखाने की कोशिश कर सकता था। यदि कोई उससे कुश्ती लडता तो वह उसे पटकी दिखा सकता था। लेकिन इस अछूतपन की कमजोरी के लिए वह एक बालक के रूप मे कुछ भी नही कर सकता था। वह अपना महार जाति का जन्म बदल कर किसी ब्राह्मण की सन्तान नही बन सकता था। विद्यार्थी के रूप मे कोई भी अच्छा काम करने पर भी उसे बाद मे यही सुनने को मिलता कि वैसे तो वह अछूत ही है। कोई भी अच्छा काम करके अपने ऊपर लगा अछूतपन का कलक उससे धुलता नही था। इस कलक को मिटाने के उसके सारे प्रयत्न बेकार थे। उसकी मुसीबते कम नही थी।

उसके स्कूल मे पानी पीने के लिए एक नल था। इस नल से सभी सवर्ण बच्चे पानी पिया करते थे। भीम को यह सख्त आदेश था कि वह



सवण हिन्दू उस पर टूट पडे

नल को न छूए। जब उसे पानी पीना होता था तो उसे नल की टोंटी खोलने के लिए दूसरे बालको की खुशामद करनी पडती थी।

सबसे अधिक मुसीबत खाने के बाद पानी पीने की थी। पहली बात तो यही थी कि सारे सवर्ण बच्चो के पानी पी लेने के बाद ही भीम पानी पी सकता था। कभी-कभी सवर्ण बच्चे खुद पानी पीकर टोंटी को बन्द कर देते थे। ऐसे समय मे सामने नल होते हुए भी भीम को प्यासा रहना पडता था। उसकी आंखो के सामने टोंटी होती थी पर उसे वह छू नही सकता था। वह अपने घर आने के बाद ही पानी पी पाता था। इतनी देर उसे प्यास से तडपना पडता था।

भीम के स्कूल के रास्ते मे एक सार्वजनिक कुआं पडता था। जिस दिन उसे स्कूल मे पानी नही मिलता था उस दिन वह इस कुएँ से पानी पी लिया करता था। कुछ समय बाद वहां के सवर्णो को इस बात का पता चल गया। इससे उनको बहुत गुस्सा आया और वे भीम की ताक मे पड गए।

आज भीम ने उस कुएँ से फिर पानी पी लिया। उसी समय सवर्ण हिन्दू उस पर टूट पडे। उन्होंने उसकी निर्दयता मे पिटाई की। भीम एक बालक ही था। तब तक उसकी छोटी-सी छाती और छोटे-से हाथ थे। वह पिट कर रह गया। इतना छोटा बालक उनके सामने कर ही क्या सकता था।

अध्याय—7

शिक्षक को शिक्षा

खुद उसके शिक्षक भी उसकी सहायता नही करते थे।

शिक्षक का काम अपने छात्र की सहायता करना होता है। एक अच्छे शिक्षक का यह कर्तव्य है कि वह अपने छात्रो को प्रोत्साहित और प्रेरित करे। यदि वह ऐसा नही कर पाता है तो शिक्षक के रूप मे वह एक असफल व्यक्ति कहा जाएगा। बालक भीम के एक शिक्षक इससे बिल्कुल उल्टा करते थे। वे ब्राह्मण जाति के थे। वे सवर्णों के बच्चो को तो पढाई-लिखाई के लिए प्रोत्साहित करते थे परन्तु भीम को रोज-रोज निरुत्साहित किया करते थे। वे बात बात मे कक्षा मे भी भीम का नाम लेकर महारो के प्रति बनाई गई जातीय द्वेष की लोकोक्तियाँ और मुहावरे सुनाते थे। जब वे भीम को छेडना चाहते थे तभी कह देते थे—"महार के, तू पढाई-लिखाई क्यो करता है ? तुझे क्या पढकर कलक्टर बनना है ?"

एक दिन भीम से यह फब्ती न सही गई। उसने कक्षा मे खडे होकर उस ब्राह्मण शिक्षक से कहा—"आप मेरे शिक्षक है और वही बने रहिए। यह आपका अधिकार नही है कि आप मेरा और मेरी जाति का अपमान करे। और पढ लिखकर मैं क्या बनूंगा—इससे भी आपका कोई सरोकार नही है। आप मेरे शुभचिन्तक नही है। आप इसे जानने की तोहमत मत उठाइए।" भीम ने शिक्षक को अन्तिम चेतावनी देते हुए कहा—"आपका मैं आदर करता हूँ, लेकिन यदि आपने आइन्दा मेरी जाति का जिक्र किया तो इसका बुरा परिणाम होगा।"

इस प्रकार भीम की बुढापे तक की लडाई उसके बचपन मे ही शुरू हो गई थी। इस घटना ने उसके भावी जीवन की विचारधारा को एक सशक्त मोड दिया।

अध्याय—8

भीम की जिद

भीमराव अपने वचपन मे जिद्दी भी था। जिस बात को सोच लेता था उसी के पीछे पड जाता था। फिर चाहे उसे कुछ भी करना पडे।

वह दूसरी कक्षा मे पढ रहा था। उस दिन मूसलाधार वारिश हो रही थी। भीम को स्कूल जाना था। भीम अपना बस्ता और टोपी ले कर तैयार हो गया। उसके पास अपनी छतरी भी थी। घर से बाहर निकलने पर उसे अन्य साथी मिले। अपने साथियो से उसकी वहस हो गई। उसके एक साथी ने कहा—"अपने आपको वडा धबल बनता है। आज विना छतरी के इस वारिश मे स्कूल पहुँचे तो हम जाने।"

भीम के बात लग गई। उससे रहा न गया। उसने चुनौती स्वीकार करते हुए कहा—"असल माँ का लाल हूँ। मैं आज विना छतरी के स्कूल जाऊँगा।"

भीम का बडा भाई आनन्दराव भी स्कूल जा रहा था। भीम ने अपना बस्ता और अपनी टोपी आनन्दराव को थमाते हुए कहा—"लो भैया, तुम मेरा बस्ता और मेरी टोपी अपनी छतरी में बचाकर ले जाओ। मैं स्कूल विना छतरी के चलूगा।"

आनन्दराव ने कहा—'क्या बेवकूफी करता है? आराम से अपनी छतरी लगाकर चल।"

भीम ने कहा—भैया, यह बेवकूफी की बात नही है। आज मै यह बाजी जीत कर मानूगा। मैं इन्ह यह दिखा दूंगा कि मैं बात का धनी हूँ वरना ये लोग बाद मे मेरी मजाक उडाएँगे।"

बडे भाई को भीम की बात माननी पडी। भीम बरसते पानी मे चल पडा।

स्कूल तक भीम के सारे कपडे भीग गए थे। उसके बालो से और कपडो से पानी टपक रहा था। इसी हालत मे वह स्कूल के दरवाजे तक पहुँचा।

भीम के अध्यापक का नाम पडसे था। वे एक ब्राह्मण थे और भीम को बहुत प्यार करते थे। उन्होंने भीम को इस हालत में देखकर हैरानी से पूछा—"भीम, तुम इस बारिश मे भीगते हुए स्कूल आए हो, क्या तुम्हारे पास छतरी नही थी ?"

भीम असली बात को छुपा कर बोला—"मास्टर जी, हमारे घर मे एक छतरी थी और उसे मेरे बडे भाई ले आए थे। मुझे बिना छतरी के ही आना पडा।"

यह सुनकर पेडसे साहब को भीम पर बहुत तरस आया। उनका घर स्कूल के पास ही था। उनका लडका भी उसी स्कूल मे पढता था। उन्होंने अपने लडके से कहा—"जाओ, भीम को घर ले जाओ। बेचारे को ठण्ड लग रही है। नहाने के लिए गर्म पानी देना। पहनने के लिए लगोटी दे देना। इसकी धोती कमीज सूखने के लिए फैला देना। शाम को यह अपने घर चला जाएगा।"

पेडसे साहब के लडके ने ऐसा ही किया। भीम को गरम-गरम पानी मे नहाना बडा अच्छा लगा। अब वह केवल लगोटी मे था।

भीम आज इस बात मे खुश था कि वह दूसरे लडको से अपनी बाजी जीत गया है। लेकिन वह इससे भी ज्यादा इस बात से खुश था कि आज उसका स्कूल से पिंड छुट गया है।

अब भीम को मस्ती की सूझी। उसके मन मे इतराने की आई। उसने दूसरे लडको को नीचा दिखाना चाहा। इसके लिए वह उस नग-धडग अवस्था मे स्कूल के पास टहलने गया। वह स्कूल के दूसरे लडको को यह दिखाना चाहता था कि वह कितने मजे मे है।

भीम वहा टहल ही रहा था कि उसे पेडसे साहब ने देख लिया। उन्हे भीम पर बहुत गुस्सा आया। उन्होने उसे अन्दर बुलाया और उसी नग-धडग अवस्था मे कक्षा मे बैठने को कहा।

इससे भीम के मन पर बहुत जोर पडा। वह अपने किए पर पछताने लगा। आज उसने एक साथ कई गलत काम किए थे। वह पहले सिर नीचा किए शर्म से गड गया। फिर कक्षा मे सबके सामने अपने अपमान की सोच कर रो पडा।

सौतेली माँ

भीम कभी मा की गोद का चुनमुन भी रहा था। लेकिन वह ऐसा चुनमुन थोडे ही दिन रह सका। जब वह छोटा ही था तभी उसकी प्यारी माँ का देहान्त हो गया था।

छह वर्ष के भीम की माँ मर गई थी। घर मे सब रो रहे थे। भीम दूसरो को देख-देखकर रो रहा था। उसे यह पता नही था कि उसकी माँ मर गई है। वह सोच रहा था कि मा सो गई है।

बहुत दिनो से भीम अपनी माँ को ढूंढ रहा था। वह सोचा करता था—माँ कही गाव चली गई है। वह दूसरो से कहा करता था—वह उसे छोड गई है और अभी तक वापस नही आई है। उसकी बुआजी उसे बताती थी कि एक दिन वह लौट कर आ जाएगी।

एक दिन भीम ने देखा—उनके घर मे एक औरत आई है। भीम बाहर से खेल कर आया था। औरत ने भीम को पुचकारना चाहा।

उससे दूर हटते हुए भीम ने पूछा—"तुम मेरी माँ के जेवर क्यो पहने है ?"

औरत ने कहा—"बेटा, मै ही तेरी मा हूँ।"

भीम ने गुस्से म कहा—"तू झूठ बोलती है। तू मेरी मा नही है।"

राम जी सूबेदार न भीम को समझाया—'बेटा, यही तेरी माँ है।"

भीम की बुआजी ने भी कहा—'भीम, अपनी माँ से बोल। तू बहुत दिनो से अपनी माँ का इन्तजार कर रहा था। अब वह गाव से लौट आई है।

भीम किसी की बात नही मान रहा था। वह कह रहा था—'यह मेरी मा नही है। इससे मेरी माँ के जेवर छीन लो।"

यह भीम की सौतेली माँ थी। रामजी सूबेदार भीम को बहला रहे थे। सौतेली माँ आश्चर्यचकित थी। भीम की बुआ आँसुओ से मुँह धो-धोकर सुबक रही थी।

स्थिति यह थी कि रामजी सूबदार की बडी बहन मीरा उनके परिवार के साथ रहती थी। लेकिन वह बेचारी अपग थी। भीम की दोनो बडी बहनो—मजुला और तुलसी—की शादियाँ हो चुकी थी। घर की देखभाल करने वाला कोई नही था।

सौतेली माँ का नाम जीजा बाई था। यह एक विधवा औरत थी। इससे रामजी सूबेदार ने पुर्नविवाह किया था।

भीम ज्यो-ज्यो बडा होता गया, सौतेली माँ से और भी दूर होता गया। सौतेली माँ एक साधारण औरत थी। उसमे एक सौतेली माँ की सारी कमजोरिया थी। फिर वह अपने सौतेलेपन की उन कमजोरियो को कहाँ तक दूर करती— यहाँ उसके सामने भीम के रूप मे एक असाधारण बालक था। वह सूबेदार की घर-गृहस्थी को साधारण तरीके से ले रही थी। उस बेचारी को यह पता कहाँ था कि उसके आँगन मे ससार का एक महापुरुष खेल रहा है।

भीम अपनी सौतेली माँ से बहुत जलता था। कुछ बडा होने पर उसने सोचना आरम्भ किया—उसके पिता ने दूसरी शादी क्यो की ? इस विषय मे भीम केवल अपने बारे मे सोचा करता था। उसने अपने पिता की समस्या पर कभी ध्यान नही दिया। उस बचपन मे उसका ध्यान वहाँ तक जा भी नही सकता था। वह अपने पिता को बुरा आदमी समझने लगा था।

रामजी सूबेदार उसे समझाया करते थे—"तेरी अपनी सौतेली माँ से नही बनती, कोई बात नही। तू अपना मन पढाई-लिखाई मे लगा। घर गृहस्थी की बातो से तुझे क्या मतलब ? जब तक मैं हूँ, तू किसी बात की फिक्र मत कर। खा-पी, पढ-लिख और मौज उडा।"

भीम को अपने पिता की इन बातो से सन्तोष नही होता था। उसने घर के वातावरण से अलग अपने मन मे एक दुनिया बना ली। वह उस दुनिया के अनुसार जीना चाह रहा था। घर मे सौतेली मा को देख कर उसे घुटन महसूस होती थी। उसने सोचा कि वह अपनी नौकरी करेगा और घर से अलग रहेगा।

अध्याय—10

बटुवे की चोरी

घर मे किसी को पता नही था कि इस बच्चे के मन मे क्या-क्या आता है। उन दिनो सब इसके गुमसुमपन से परेशान थे। भीम को पता चल गया था कि उसकी उम्र का एक पडासी लडका बम्बई के एक मिल मे नौकर लग गया है।

भीम ने एक योजना बनाई कि नौकरी करने के लिए वह बम्बई जाएगा। लेकिन बम्बई जाने के लिए उसे किराये के लिए पैसो की जरूरत थी। उसके पास एक भी पैसा नही था।

किराए का पैसा प्राप्त करने के लिए उसे एक उपाय सूझा। उसने देखा कि उसकी बुआजी एक बटुआ रखती है। उसने माना कि उसमे पैसे जरूर होने चाहिए।

उसने सोचा—माँगने से बुआजी पैसे नही देंगी, उल्टे उसकी योजना का भी भडाफोड हो जाएगा। इससे उसे कोई बम्बई नही जाने देगा। उसने तय किया कि बुआ के बटुए से पसे चुराए जाएँ। यह विचार आते ही उसके मन ने उससे कई बार पूछा—"क्या बुआ के पैसे चुराए जाएँ?"

उसने कभी चोरी नही की थी। इसके उत्तर के लिए वह धर्म सकट मे पड गया। लेकिन बम्बई जाने और स्वाभिमान से रहने के तर्क ने जोर पकडा। उसने अतिम रूप से निश्चय किया—"हाँ, चोरी की जाए।"

अब समस्या यह आई कि बुआ का बटुआ उसके हाथ कैसे लगे? दिन मे वह बटुआ नही मिल सकता था। रात को बुआ उसबटुवे उ को

अपनी कमर मे बांध कर सोती थी। भीम ने सोचा—रात का ही बटुआ चुराया जाए।

आज रात भीम ने जागने की ठानी। वह टकटकी लगा कर इस ताक मे रहा कि उसे बटुआ मिल सके। लेकिन करवट लेते समय बुआ का बटुआ भी करवट ले लेता था। सारी रात घात मे रहने पर भी बटुआ चुराने की भीम की ताल नही लगी।

अगली रात आई। भीम हताश नही हुआ था। उसने आज रात फिर जागने की ठान ली। बम्बई जाने की ललक उसकी आखो मे नीद नही आने देती थी। भूल से उसके खांस जाने पर एक बार बुआ ने नीद मे पूछा—"क्या बात है भीम ? क्या तुम्हे नीद नही आ रही है ? भीम ने चालाकी से सामान्य जवाब दिया—"कुछ नही बुआजी, वैसे ही खांसी उठ गई थी। तुम सो जाओ।" आज भीम बहुत चालाक और झूठा हो गया था।

दूसरी रात भी भीम को सफलता नही मिली। उसने तीसरी रात पर अपनी निगाह रखी। अन्त मे वह चौथी रात मे बटुवे को चुराने मे सफल हो गया। उसकी खुशी का पारावार नही था। उसने झटपट बटुवे को खोला। पर उसमे केवल एक अधन्ना था। उससे क्या बनता है ! भीम के सारे सपने पर पानी फिर गया।

अब वह अपनी बुआजी के बारे मे सोच रहा था। वह बहुत अच्छी थी। उसने भीम को बालक की तरह पाला था। भीम ने उसके बटुवे की चोरी की है। उसे कुछ नही मिला पर उसकी नीयत तो डिग गई थी।

इस घटना से भीम के मन पर बहुत जोर पडा। उसका जी आत्म-ग्लानि से भर गया। वह खुद अपनी नजरो मे गिर गया। उसने प्रण किया कि अब फिर कभी घर से भागने की नही सोचूगा। उसने वह बटुआ उस अधन्ने समेत बुआ के पास रख दिया।

इस समय उसे अपने पिता के प्यार की भी याद आई। वे उसे रोज सुबह उठा कर कितनी मेहनत और लगन से पढाते हैं। उसके मन मे क्षोभ उत्पन्न हुआ कि वह व्यर्थ मे अपने देवता तुल्य पिता को बुरा मानता रहा है। उसने मन मे ठान ली—आज से अपने पिता की सीख के अनुसार अपना मन केवल पढाई-लिखाई मे लगाऊंगा।

यूँ बालक भीम ने अपने आपको सभाल लिया। उसने सौतेली मा से घृणा करनी छोड दी। अब वह उसके सोचने का विषय नही रह गई थी।

यह उसके जीवन मे भारी परिवतन था। इसके बाद उसने सोचा कि जो चीज उसे पढने की ओर नही ले जाती है यह बुरी चीज है। इसी आधार पर उसने पुस्तक न पढने को गन्दी और बुरी आदत मान कर और भी तेजी से नई-नई पुस्तके पढनी आरम्भ कर दी। उसने एक नया मन्त्र खोजा—"मैं पढ-लिख कर ही पूर्ण स्वावलम्बी बन सकूगा, ऐसे घर मे भाग कर नही।"

अध्याय—11

सिर के बाल

भीम के सिर के बाल बढ गए थे। उसकी चनौती काफी नीची हो गई थी। लम्बे बालो के कारण वह अपने-आपको भद्दा-सा महसूस कर रहा था।

वह कई दिनो से प्रयत्न कर रहा था कि अपने बाल कटवा ले लेकिन अभी उसके पास पैसे नही थे। सयोग से आज उसकी जेब मे पैसे थे। वैसे भी वह सफाई पसन्द विद्यार्थी था। वह शरीर से साफ-सुथरा और अच्छा बनकर रहता था।

उसके रास्ते मे एक नाई की दुकान पडती थी। वहा पर बहुत सारे लोग अपने बाल कटवाते थे। वह भी उस दुकान पर पहुँच गया। नाई एक बालक की कटिंग कर रहा था।

नाई ने भीम से पूछा—"क्या बात है ?"

भीम ने कहा—"मुझे अपने बाल कटवाने है।"

नाई ने कहा—"लेकिन तू तो महार का है।"

भीम ने साधारण स्वभाव से पूछा—"तो इसमे क्या हुआ ?"

नाई का जवाब था—"मैं अछूतो के बाल नही बना सकता।"

भीम का नाई से लडने को जी चाहा।

उसने नाई से पूछा—"इसमे तुम्हे क्या परेशानी है ? मैं तुमसे मुफ्त मे बाल नही बनवा रहा हूँ। तुम्हारे जितने पैसे बनेंगे उतने दूगा। उधार नही बनवाऊँगा। मेरी जेब मे पैसे है।"

नाई ने भीम से कहा—"यह पैसे की और उधार की बात नहीं है।"

भीम न पूछा—"तो फिर क्या बात है ?"

नाई ने कहा—"मेरी तो दुकान बन्द हो जाएगी।"

अब भीम ने आश्चर्य से पूछा—"मेरे बाल काटने से तुम्हारी दुकान क्यो बन्द हो जाएगी ?"

नाई ने बताया—"यदि मैं अछूतो के बाल काटने लगूगा तो मेरे उस्तरे और मशीन अपवित्र हो जाएँगे। मेरी दुकान पर ब्राह्मण और बनिए बाल कटवाने आते हैं। वे फिर दुकान पर आना बन्द कर देंगे। मेरी सब आमदनी रुक जाएगी। मेरे बच्चे भूखे मरने लगेंगे। इसलिए मैं तुम्हारे बाल नही काट सकता।"

यह सुनकर भीम परेशान हो गया। यदि केवल एक नाई की बात होती तो वह उससे निपट लेता। लेकिन यहा तो चारो ओर छुआछूत का राज था। इस छुआछूत का लोगो की रोजी-रोटी पर बुरा असर पड रहा था। यदि छुआछूत न माने तो नाई का परिवार भूखा मर जाएगा। इस बात को सोच कर वह असहाय रोने लगा।

रोते-रोते वह अपने घर पहुँचा। घर पर उसकी बडी बहन तुलसी थी। वह उसे बहुत प्यार करती थी।

बहन ने पूछा—'क्या हुआ भीम ? रोता क्या है ? क्या तुझे किसी ने मारा है ?'

भीम ने कहा— नही, किसी ने नही मारा।'

बहन ने फिर पूछा—"तो फिर तू रो क्या रहा है ?'

भीम ने बहन से बताया—"नाई ने मेरे बाल नही काटे और कहा कि मैं अछूत हूँ।'

बहन ने कहा— 'अरे पगले, इस बात से रोता है ! तू उसकी दुकान पर गया ही क्यो था ? तू मुझे बताता। मैं तेरे बाल काट देती। गलती मेरी है कि मुझे ही ध्यान नही रहा था कि तेरे बाल बढ गए हैं।"

बहन अन्दर से कैंची निकाल लाई। उसने भीम को गर्दन झुकाने को कहा। भीम ने गर्दन झुकाई। बहन बहुत चतुर लडकी थी। बालो को कैंची से काटने लगी। यह उसका पुराना अभ्यास था। यह उसने अपनी बुआ मीरा से सीखा था।

भीम ने बडी बहन से पहले भी बाल कटवाए थे लेकिन इस बार बाल कटवाने का यह नया संस्कार था। बहन की कैंची और अगुली

उसे सुख पहुँचा रही थी और नाई का व्यवहार उसके मन को रुलाए जा रहा था। इस समय जीवन का वह विद्यार्थी प्रेम और घृणा का समान रूप से भागी था। उसके मन पर सृष्टि और समाज के रहस्य की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। जात-बिरादरी का अपमान उसे दुख दे रहा था और बहन का पारिवारिक प्यार उसे सुख पहुँचा रहा था।

उसे यह घटना सदा याद रही। तभी उसने बड़ा होकर हिन्दुस्तान में तमाम ऐसे नाइयों की दुकानें संसद में कानून पारित करवा कर गैर-कानूनन घोषित करवा दी जो अस्पृश्यता को मानते थे।

अध्याय—12

बारिस मे अकेला

कई दिनो के वाद वारिस रुकी थी। आज आकाश मे वादल नही थ। हवा मे कुछ गर्मी और उमस भी थी।

आज भीम को अकेले स्कूल आना था। वडा भाई आनन्द राव बीमारी की वजह से घर रुक गया था।

भीम ने अपना वस्ता अपनी पीठ पर वाध लिया। वह तेज चाल से अपने स्कूल के रास्ते पर जा रहा था।

किसी को ऐसा आभास नही हो सका था कि आज वर्षा हो सकेगी। यदि वारिश की उम्मीद होती तो भीम को स्कूल जाने से रोक लिया जाता या उसे छाता दे दिया जाता। लेकिन भीम के रास्ते मे जाते समय अचानक वर्षा आरम्भ हो गई। ,थोडी ही देर मे वर्षा उग्र रूप धारण करने लगी। वह मोटी मोटी वूदो मे जोर-जोर से पडने लगी।

वादल की गडगडाहट और विजली की चौध घर मे बैठे हुए लोगो का भी दिल दहला रही थी। ऐसे समय भीम रास्ते मे अकेला पड गया था। अभी स्कूल वहुत दूर था।

वह प्रकृति की इस मार से वचने की कोशिश करने लगा। उसने बचाव के लिए इधर-उधर देखा। वह एक पेड के नीचे गया पर तव तक पेड के पत्ते भी वारिश को रोक पाने मे असमर्थ थे।

उसने अपने दाहिनी ओर एक मकान देखा। उसकी दीवार काफी ऊँची थी। दौड कर उसने दीवार की ओट मे शरण ली। वह अपने वस्ते समेत दीवार से विल्कुल चिपक गया था।

भीम के इस व्यवहार को उस मकान की मालिक खिडकी से देख

रही थी। वह सवर्ण जाति की महिला थी। उसे यह भी पता था कि यह लडका महारो का है।

उस औरत ने भीम से कहा—"ऐ महार के, तू हमारी दीवार से लग कर क्यो खडा है ? क्या तुझे अपवित्र करने के लिए हमारा ही घर मिला है ? चल, भाग यहाँ से।"

भीम इस प्रश्न का कोई उत्तर नही दे सकता था। वह घबराहट मे चुप ही खडा रहा।

औरत ने पुन भीम को घुडकी देते हुए वहा से हट जाने के लिए कहा। वह इस बार भी उसकी बात सुन कर भयभीत खडा रहा। वह एक बार उस औरत की गुस्से मे मोटी-मोटी लाल आँखें देखता था और दूसरी बार बिजली की गडगडाहट मे सामने होती हुई मूसलाधार वर्षा।

औरत को इस बार और भी ज्यादा क्रोध आया। उसने आवेश मे कहा—"जाता है कि डडे की जरूरत पडेगी ?"

भीम ने इस बार खिसियाना होकर अपना मुंह खोला—"मैं यहाँ खडा थोडे ही रहूँगा। बारिस हलकी पड जाएगी तो चला जाऊँगा। तब तक तुम्हारी दीवार का कुछ छुटा नही लूँगा।"

यह सुनकर औरत गुस्से मे आग बबूला हो गई। उसने कहा—"तो यह मैं तुझसे पूछूंगी कि तू मेरी दीवार का क्या छुटा लेगा ?" उसने बाहर आ भीम को बरसते हुए पानी मे धक्का दे दिया। भीम को इतनी आशा न थी। वह बरसते हुए पानी मे गिर पडा। उसकी किताबें, कलम और कापियां तितर-वितर बिखर गईं। उसका बस्ता कीचड मे सन गया।

भीम का सारा बचपन उसके मन पर जोर पडने के लिए ही था। आज फिर उसका दिल टूट गया। वह उस औरत को देखता ही रह गया। वह सोच रहा था—आग पानी से लडने मे भी मनुष्य एक-दूसरे की सहायता नही करते है। इन्हे अपने सस्कारो की पडी रहती है। उसने अपने आप से पूछा—"मनुष्य बुरा है या मनुष्य का ऐसा धार्मिक सस्कार बुरा है ?" बडा होकर उसने स्वय खोज की—मनुष्य बुरा नही है बल्कि मनुष्य का ऐसा स्वार्थी और घमण्डी सस्कार बुरा है। मनुष्य के रूप मे वह आपस मे मिलकर प्रकृति से लडता है, लेकिन सस्कारी होकर वह आपस मे दुश्मन बनकर लडता है।

अध्याय—13

गणित की कक्षा

भीम को प्राइमरी शिक्षा के बाद बम्बई के एलफिन्स्टन हाईस्कूल मे भर्ती किया गया। यह ब्रिटिश गवर्नमेंट का सरकारी स्कूल था। सरकारी स्कूलों मे ऐसी कोई पाबन्दी नही थी कि अछूतो के बच्चो को दाखिला न दिया जाए।

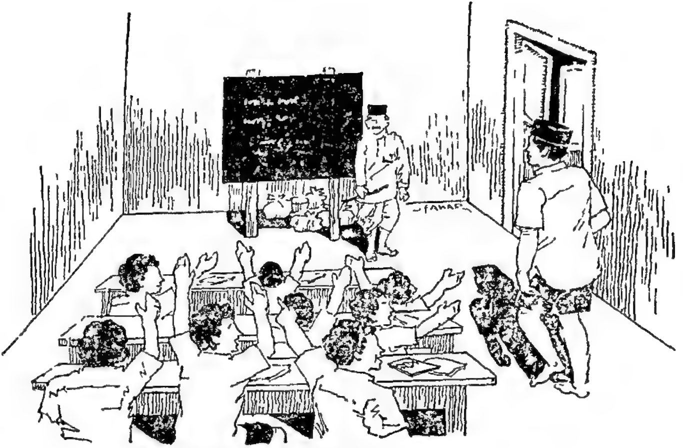
बात केवल दाखिले की नही थी। दाखिला मिल जाने के बाद किसी विद्यार्थी को इतना तग किया जा सकता था कि वह खुद स्कूल छोड दे। भीम के साथ ऐसा ही दुर्व्यवहार किया गया था।

गणित की कक्षा चल रही थी। कक्षा मे काफी विद्यार्थी थे। मास्टर बारी-बारी से विद्यार्थियो से सवाल हल करवा रहे थे। वे विद्यार्थी को बोर्ड पर बुलवाते थे। विद्यार्थी हाथ मे चाक लेकर सवाल को अपनी बुद्धि के अनुसार हल कर पाते थे या हल नही कर पाते थे। सब कुछ ठीक चल रहा था। विद्यार्थी इज्जत या बेइज्जती का अनुभव इस बात से करता था कि वह सवाल को हल कर पाता है या नही। जो सवाल हल नही कर पाता था वापिस सीट तक आने मे उसका मुंह लटक जाता था।

भीम का नम्बर भी आया। मास्टर ने उसे बुलाया कि वह बोर्ड पर आकर सवाल हल करे। भीम अपनी सीट से उठकर ब्लैक बोर्ड की ओर चल दिया। तभी कक्षा मे शोर मच गया। सारे बच्चे कहने लगे—"मास्टर जी, भीम को रोकिए।"

मास्टर साहब कुछ समझे नही। भीम आगे बढता रहा।

बच्चो ने और जोर से शोर मचाया—"मास्टर जी, भीम को रोकिए, नही तो अनर्थ हो जाएगा।"



भीम को रोकिए, नही तो अनर्थ हो जाएगा।

मास्टर ने झुझला कर पूछा—"क्या बात है ? क्यो शोर मचा रहे हो ? क्यो क्लास सिर पर उठा ली है ?

बच्चो ने बताया—"मास्टर जी, हमारे खाने के डिब्बे ब्लैक बोड के पीछे रखे हैं। भीम ब्लैक बोड को छूएगा तो हमारे खाने के डिब्बे भी अपवित्र हो जाएँगे। फिर आज हमें भूखा रहना पडेगा।"

मास्टर जी कितने भी उदार विचारो के होते फिर भी क्या कर सकते थे ? तब शिक्षा का प्रभाव यह नही था कि लोग आपस मे भाई-चारे से रहना सीखे। फिर भी मास्टर जी ने अपने शिक्षक धर्म का पालन किया। उन्होंने बच्चो से कहा—"आप अपने लंच के डिब्बे वहाँ से हटा लीजिए। भीम ब्लैक-बोड पर जरूर जाएगा।" मास्टर ने भीम को तब तक बीच मे रोक दिया। भीम रुक गया और डिब्बे हटने तक की इतजार करने लगा। यह इतजार इतजार कम और उसके लिए मानसिक पीडा अधिक थी। वह चार-पाँच मिनटो का समय उसके मस्तिष्क पर प्रलय गुजार रहा था। यह कुछ समय की प्रतीक्षा उसके धैर्य और साहस की प्रतीक्षा थी।

किसी विद्यार्थी की मजाक तब की जाती थी जब उससे सवाल हल न हो पाता था। लेकिन भीम के मामले मे यह दूसरी ही बात थी। उसे सवाल हल करने का मौका नही मिल रहा था। वह महाभारत के पुराने एकलव्य के समान कम्पीटिशन के योग्य नही माना गया था। बिना उसकी बुद्धि की जाच किए उसे अयोग्य घोषित कर दिया गया था। उसे बताया जा रहा था कि वह नीच जाति से है।

ऐसे मे कोई भी साधारण बालक विचलित होकर घबरा जाता और ब्लैक बोर्ड तक नही जाता। लेकिन डिब्बे हट जाने के बाद भीम अविचलित रह कर शात भाव से ब्लैक बोड पर गया। उसने सवाल हल भी किया। लेकिन एक मास्टर के सिवा उसकी किसी ने प्रशसा नही की। भीम इस जहर के घूट को जीवन भर याद करता रहा। बचपन की यह घटना उसे चैन से न बैठने देने के लिए थी।

अध्याय—14

संस्कृत के अध्यापक

यह हमारे देश मे सास्कृतिक खोज का समय था। बगाल मे स्वामी विवेकानन्द ने सारे भारतवासियो के लिए सस्कृत के ज्ञान को अनिवार्य माना था। उन्होंने घोषणा की थी कि शूद्रो और अछूतो को सस्कृत का विशेष रूप मे अध्ययन करना चाहिए। उनके अनुसार, सस्कृत हिन्दू समाज मे उच्चता प्राप्त करने की कुजी थी।

उत्तर भारत मे स्वामी दयानन्द ने हिन्दुओ के लिए सस्कृत का पढना आवश्यक बताया था। इसके लिए उन्होने प्राचीन वैदिक सस्कृत का डका बजाया था। उन्होने तर्क के आधार पर और प्राचीन शास्त्रो के प्रमाण देकर शूद्रो और नारियो के लिए सस्कृत की शिक्षा की वकालत की थी।

महाराष्ट्र मे बाल गगाधर तिलक ने वेदो की महत्ता प्रतिष्ठित करने का प्रयास किया। उन्होने गीता पर अपना भाष्य भी तैयार किया था। इस प्रकार हिन्दू समाज मे चारो ओर वेद और सस्कृत की ओर लौटने का बिगुल बज चुका था।

इस वातावरण मे अम्बेडकर का भी मन हुआ कि वह भी सस्कृत भाषा सीखे। सस्कृत दूसरी भाषा के रूप मे पढाई जाती थी। अम्बेडकर ने उसके लिए अपना नाम दे दिया।

उसके सस्कृत के अध्यापक एक कट्टर ब्राह्मण थे। उन्होने अम्बेडकर को सस्कृत पढाने से मना कर दिया। अम्बेडकर पर इस बात का बहुत जोर पडा। उसने ब्राह्मण अध्यापक से पूछा—"आप मुझे सस्कृत क्यो नही पढने देते हो?"

अध्यापक का उत्तर था—"तुम एक अछूत हो।"

अम्बेडकर ने पुन पूछा— 'मेरे अछूत होने का सस्कृत पढने से क्या सबध है ?"

अध्यापक ने उत्तर दिया—"सस्कृत देववाणी है। इसमे हमारे पवित्र धर्मग्रन्थ लिखे हुए है। तुम्हारे द्वारा पढने से यह देववाणी और हमारे धर्मग्रन्थ अपवित्र हो जाएँगे।

अम्बेडकर ने उन्हे विश्वास दिलाया—"मैं उन्हे अपवित्र नही करूँगा, कृपया आप मुझे सस्कृत पढा दीजिए।"

अध्यापक ने बताया—"ये तुम्हारे कहने या न कहने से अपवित्र नही होंगे बल्कि तुम्हारे पढने मात्र से अपवित्र हो जाएँगे।"

अम्बेडकर की समझ मे कुछ नही आ रहा था। अध्यापक ने आगे कहा—"शास्त्र के अनुसार जो ब्राह्मण गुरु अछूत को सस्कृत पढाता है वह भी पाप का भागी होकर अपने ब्राह्मणत्व से पतित हो जाता है। मैं अपने ब्राह्मणत्व से नीचे गिरना नही चाहता। इसलिए मैं तुम्हे किसी भी शर्त पर सस्कृत नही पढाऊँगा।" तब अम्बेडकर को मजबूर होकर दूसरी भाषा के रूप मे फारसी लेनी पडी।

अम्बेडकर इस समय बेहद रोया था। उसे इस बात का तमाम जिदगी दुख रहा कि ब्राह्मण अध्यापक द्वारा उसे सस्कृत नही पढाई गई थी। वह सारी उम्र सस्कृत ग्रथो के अग्रेजी, मराठी और हिदी अनुवादो को पढता रहा। बाद मे उसने स्वय प्रयत्न करके सस्कृत पर अपना अच्छा अधिकार प्राप्त कर लिया था।

अध्याय—15

बैलगाडी की सवारी

अम्बेडकर जव हाई स्कूल का छात्र था उन दिनो की एक और घटना है।

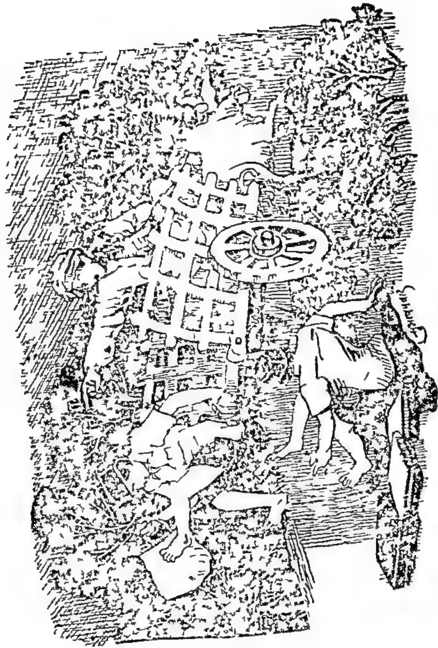
रामजी सूबेदार गोरे गाव मे नौकरी करते थे। वे वहाँ खजाची थे। तव अम्बेडकर, उसके वडे भाई आनन्दराव और छोटे भतीजे वम्बई मे रहते थे।

अम्बेडकर और उसके बडे भाई ने अपने पिताजी से मिलना चाहा। उन्होंने इस आशय का एक पत्र अपने पिताजी को लिख दिया था। उन्होंने पत्र मे सूचना दे दी थी कि वे अमुक दिन और अमुक समय मसारे के रेलवे स्टेशन पर पहुँचेंगे।

सही ट्रेन से अम्बेडकर अपने वडे भाई और छोटे भतीजे के साथ पिताजी से मिलने के लिए चल दिया। वे पडोली रेलवे स्टेशन से चढ कर ठीक समय मसारे रेलवे स्टेशन पर पहुँच गए।

इन बच्चो को उम्मीद थी कि उन्हे मसारे से गोरे गाव लिवा ले जाने के लिए पिताजी ने कोई आदमी भेजा होगा। लेकिन वहा ऐसा कोई आदमी नही था। असल मे हुआ यह था कि उनके पिताजी को वह पत्र मिला ही नही था। अम्बेडकर और उनके वडे भाई किसी आदमी को न पाकर परेशान हो गए। पर उन्हे गोरे गाँव जरूर पहुँचना था। उन्हाने स्टेशन मास्टर को अपनी परेशानी वताई। स्टेशन मास्टर ने उनकी सहायता करते हुए भाडे की एक बैलगाडी का प्रवन्ध कर दिया।

ये वच्चे साफ स्वच्छ कपडे पहने हुए थे। ये गाडी मे बैठ गए।



लेकिन गाडी कुछ ही दूर चली होगी कि बातचीत करते हुए गाडीवान को पता चला कि ये अछूत बालक है। उसने बच्चो को गोरे गाँव ले जाने का अपना निर्णय बदल दिया और उन्हे तुरन्त नीचे उतरने को कहा।

अम्बेडकर और उसके बडे भाई ने गाडीवान से पूछा—"आप हमे नीचे क्यो उतार रहे हैं? आप हमे गोरे गाँव क्यो नही ले जाते?"

गाडीवान ने कहा—"तुम अछूत हो। मैं अछूत बच्चो को अपनी गाडी मे नही बैठा सकता। इससे मेरी गाडी अपवित्र हो जाएगी।"

अम्बेडकर ने गाडीवान से कहा—"तुम्हारी बैलगाडी लकडी की बनी है। हमने स्वच्छ कपडे पहन रखे है। हमारे बैठने से यह गन्दी कैसे हो जाएगी?"

गाडीवान ने कहा—"मैं यह नही कह रहा हूँ कि मेरी गाडी गन्दी हो जाएगी, मैं कह रहा हूँ कि यह अपवित्र हो जाएगी।"

अम्बेडकर ने पूछा—"यह तुमसे कौन कहता है कि हमारे बैठने से तुम्हारी गाडी अपवित्र हो जाएगी?"

गाडीवान ने कहा—"गाँव और शहर का ब्राह्मण कहता है।"

अम्बेडकर—"इस अपवित्रता का मतलब क्या है? हमारे बैठने मे तुम पर क्या फर्क पड जाएगा?"

गाडीवान—"फिर मेरी गाडी मे ब्राह्मण और बनिए नही बैठेंगे। इससे मेरी रोजी-रोटी जाती रहेगी। फिर मैं भूखा मर जाऊँगा।"

यह सुनकर अम्बेडकर परेशान था कि अछूतपन का हर तर्क पैसे से जुडकर रह जाता है। उसने गाडीवान से फिर कहा—"हम तुम्हे दुगना किराया देंगे। अब हम लोग अकेले कहाँ भटकते फिरेंगे? गोरे गाँव कैसे जाएँगे? हमे ले चलो। हमे देर हो रही है।"

अछूतपन के बारे मे मजे की बात तो यह है कि इसमे हर नियम को तोडने के लिए कोई न कोई प्रायश्चित या बहाना है। मन के जरा मे बदलाव से अछूतपन छूमन्तर हो जाता है। गाडीवान ने भी एक शर्त लगाकर उस समय के लिए छूआछूत नष्ट कर दी। उसने कहा—'एक शर्त पर गाडी मे बैठ सकते हो कि गाडी को मैं नही हाकूगा।

तुममे से ही कोई हांकेगा।"

बालक इस शर्त पर राजी हो गए। अम्बेडकर के बडे भाई आनन्द राव गाडी हाँकने लगे। गाडीवान अपनी गाडी के साथ खुद पैदल चलने लगा। वह अछूत बच्चा के साथ गाडी मे नही बैठ सकता था। यू उसे पैदल चलकर अछूतपन बरतने की मानसिक सन्तुष्टि मिल रही थी।

भीम को यह घटना जीवन पयन्त याद रही। बडा होकर उसने ऐसे सभी गाडीवानो को दण्डित कराने का कानून बनवाकर ही दम लिया जो किसी को अछूत मानते हैं।

अध्याय—16

होनहार बालक

भीम एक प्रखर बुद्धि का बालक था। उसकी प्रखर बुद्धि का मतलब यह नही था कि वह शुरू से ही कक्षा की पढाई लिखाई मे बहुत तेज था। वास्तव मे यह बच्चो का अलग-अलग स्वभाव होता है कि कोई बच्चा खेलकूद मे तेज होता है, या कोई बच्चा नाच गाने मे तेज होता है, वक्त पडने पर वह दूसरे काम मे भी तेज हो सकता है। यदि कोई बच्चा खेलकूद मे बहुत तेज है और पढाई-लिखाई मे उतना तेज नही है, यदि वह पढाई-लिखाई मे अपना मन लगाने लगे तो उसमे भी उतना ही तेज हो जाएगा जितना वह खेल कूद मे तेज है।

यह केवल रुचि की बात होती है कि कोई बच्चा किस काम मे ज्यादा तेज है। या तो बच्चा अपने स्वभाव के कारण आगे चल निकलता है या तब आगे बढता है जब उस पर कोई जिम्मेदारी की बात हो, चाहे स्वभाव की बात हो, तेज बच्चा दोनो ही रूपो मे आगे निकल जाता है।

छोटा बालक भीम अपने छोटे रूप मे स्कूल की पढाई-लिखाई मे ज्यादा मन नही लगाता था। उसका पहला शौक बागबानी का था। जहाँ कही थोडा बहुत जगह खाली मिलती उसमे वह तरह-तरह के पेड पौधे उगा देता था। वह उनके अकुर फूटते हुए और फिर उन्हे बढते हुए देखता था। उसके बाद उसे पालतू पशु पालने का शौक चढा। उसने घर मे बकरे और बकरी बाधे। वह उनकी गदन सहलाता और चूमता था। अपने साथ इधर-उधर घास चराने ले जाता था। इनमे से कुत्ता उसका जीवन भर साथी रहा। लेकिन जब उसे इस बात

का पता चला कि पढाई-लिखाई उसके जीवन का असल मकसद है तो फिर उसने सारी शक्ति पढने लिखने मे लगा दी।

पढाई-लिखाई के लिए एक तरह से उसने अपना जीवन होम कर दिया था। इसका इस बात मे पता चलता है कि उसे पुस्तक पढने का बहुत शौक था वह स्कूल की किताब भले ही ज्यादा न पढता हो लेकिन कोर्स से बाहर की किताबे बहुत पढता था।

दूसरे बच्चो की बात अलग है लेकिन जो बच्चे आगे चल कर महान बनते ह उनके जीवन की यह सच्चाई होती है कि वे स्कूल की किताबो को बहुत जल्दी पूरी कर लेते हैं। उन्हे इसके लिए अधिक समय देने की जरूरत नही होती। उनके पास स्कूल की पढाई के साथ साथ बहुत सारा समय बचता है। उसे वे खेल-कूद मे, या नाच गाने मे, या गाव गमीने मे, या तीज त्योहारो मे व्यतीत करते है। इस रूप मे भीम को किताब पढने का शौक था। यह आदत उसे बचपन से ही हो गई थी। वह दूसरो मे किताबें लेकर नही पढता था। जिस किताब की जरूरत होती थी उसे वह खुद खरीदता था। इस प्रकार बालक भीम के विशाल पुस्तकालय की नीव पडी थी।

किताबो मे बडे-बडे लोगो की बाते होती है। जिनसे हम मिलने को तरसते हैं। उनके बारे मे जानकारी मिलती है।

महापुरषो के बारे मे जानकर हम खुद अपने जीवन को आगे बढने की सम्भावना जान पाते हैं। पुस्तकें हमे आगे पढने की प्रेरणा देती है और आगे बढने का माग भी बताती है। यही कारण था कि भीम की पुस्तक ढने की उत्कण्ठा इतनी तीव्र होती थी कि उसे पढने के बाद ही वह शात हो पाती थी।

अध्याय—17

पुस्तक प्रेम

आज भी भीम ने अपने पिताजी को एक किताब का नाम लिखते हुए कहा—"पिताजी, यह किताब बहुत अच्छी बताई गई है। अंग्रेजी के मास्टर इसकी बडी प्रशसा कर रहे थे। इसमें ससार के महापुरुषो के जीवन चरित्र है। म इसे पढना चाहता हूँ। इसे आप मेरे लिए खरीद कर ले आइए।"

किताब का विषय सुनकर रामजी सूबेदार बहुत खुश हुए। लेकिन जेब की ओर देखा तो पैसे नही थे। इस माह की जो पेन्शन मिली थी वह सारी खर्च हो चुकी थी।

उनकी छोटी बेटी तुलसी विवाह के बाद बम्बई मे ही रहती थी। वे उसके घर गए और कहा—"बेटी, भीम के लिए एक किताब खरीदनी है। मेरे पास पैसे नही है, तुम्हारे पास चार रुपये हो तो दे दो। मैं उन्हे लौटा दूगा।"

तुलसी के पास भी पैसे नही थे। उन्हे कहा—"पिताजी, आज तो मेरी जेब बिल्कुल खाली है।"

उनकी बडी लडकी मजुला भी विवाहित होकर बम्बई मे ही रह रही थी। वे उसके घर गए। उससे भी उन्होने यही बात कही—"बेटी, भीम के लिए एक किताब खरीदनी है। तुलसी के पास गया था, उसके पास भी पैसे नही थे। बडी मुश्किल मे हू। तुम्हारे पास चार रुपये हो तो उधार दे दो। पेशन के पैसे मिलते ही लौटा दूगा।"

मजुला के लिए यह नई बात नही थी। ऐसे वह कई बार पैसे दे चुकी थी और वे समय पर पैसे लौटा जाते थे। लेकिन आज उसकी

भी तगी का समय था। उसने अपनी असमथता प्रकट की।

यह सुनकर रामजी सूवेदार वहुत दुखी हुए। उन्हे पता था कि यदि शाम को भीम को पुस्तक न दी गई तो वह उन्हे अपने न्यायालय मे कठघरे का एक अपराधी वना कर खडा कर देगा। इसलिए उन्होने मजुला से कहा—"वेटी, तुम मुझे अपनी वालिया दे दो। मारवाडी के पास गिरवी रख कर पैसे ले आऊगा। तव काम चल जाएगा।"

वेटी ने कानो की वालियाँ उतार कर खुशी खुशी दे दी। उनकी कोई भी वेटी जेवर के लिए मना नही करती थी। यह जेवर सूवेदार जी ने ही उन्हे शादियो मे दिया था।

वालिया ले कर रामजी सूवेदार अपने मारवाडी के घर गए। वहाँ से पैसे लेकर वाजार से किताव खरीदी और अम्वेडकर को दी। अम्वेडकर ने उसे तभी पढना आरम्भ कर दिया। वह उसकी इन्तजार मे वैठा था। रात को पढते-पढते उसी किताव का सिरहाना लगा कर सो गया।

पेंशन के पैसे मिलने पर रामजी सूवेदार वालिया छुडवा कर अपनी वेटी मजुला को दे आए।

अध्याय—18

पिता का मार्ग दर्शन

अम्बेडकर के जीवन को बनाने का सारा श्रेय उसके पिताजी को जाता है। उसके पिताजी फौज मे सूबेदार के पद से रिटायर हुए थे और सैनिक स्कूल के हेड मास्टर रह चुके थे। शिक्षा और अनुशासन उनके दिला दिमाग मे बसे हुए थे। उन्होने सैनिक जीवन का स्वभाव डाक्टर अम्बेडकर के बाल जीवन मे उतार दिया था। यह उनका एक मूर्तिकार का सा काम था।

इस बात को रामजी सूबेदार अच्छी तरह से जानते थे कि पढने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सुबह उठकर पढा जाए। इसके लिए उन्होने अपने बालक भीम की आदत सुबह दो बजे उठने की बनानी चाही। शुरु मे बालक भीम को इतनी सुबह उठने मे बडी मुश्किल होती थी। रामजी सूबेदार ने इस मुश्किल को सरल बनाया।

इसके लिए बाप और बेटे दोनो की तपस्या करनी पडी। शुरू मे ऐसा नही हुआ कि बालक भीम अपने आप दो बजे उठ जाए, किन्तु उसके पिता के नियमित जीवन के कारण इसमे कोई टालमटोल नही हो सकती थी। इसलिए भीम को सुबह दो बजे उठाने की जिम्मेदारी रामजी सूबेदार ने स्वय अपने ऊपर ली। इसमे कई बार बालक भीम नीद से आख मलता उठता था।

रामजी सूबेदार ने इस समस्या का एक उपाय खोज निकाला। उन्होने महसूस किया कि जिस दिन भीम शाम को जल्दी नही सोता उसी दिन यह समस्या विशेष रूप से बनती है। बस, रामजी सूबेदार ने यह नियम बता दिया कि चाहे घर मे कोई रिश्तेदार आये, या कोई तीज त्योहार हो, भीम को रात को नौ बजे अवश्य सोना पडेगा।



भीम मिट्टी के तेल की ढिबरी में पढ़ता था।

यह तरीका बड़ा लाभकारी रहा। इसमे भीम की नीद भी पूरी हो जाती थी और उसे सुबह उठने मे कठिनाई भी नही होती थी। बाद मे यही उसकी आदत बन गयी। आदत बन जाने पर उसे रात को नौ बजे सोने का प्रयत्न नहीं करना पड़ता था। सुबह दो बजे उठने के कारण रात को नौ बजे बिस्तर पर जाते ही नीद घेर लेती थी। उधर रात को जल्दी सोने के कारण उसकी आँख अपने आप दो बजे खुल जाती थी। हा, यह आदत डालने मे आरम्भ मे रामजी सूबेदार को खुद बहुत मेहनत करनी पडी। वे बालक भीम को नौ बजे सुला कर स्वय दो बजे रात तक जागते थे और जब भीम पढने लगता तब वे सोते थे।

रामजी सूबेदार भीम को देर रात तक पढने की आदत भी डाल सकते थे परन्तु उन्होने सुबह उठने को ही अधिक अच्छा समझा। सुबह उठने के कुछ अलग फायदे होते हैं जो गिनाए जा सकते है।

जो बच्चे शाम को देर रात बारह बजे तक पढते है उनका कुछ न कुछ समय दूसरो के कारण जरूर बर्बाद हो जाता है। शाम को वे अपने माता-पिता से बहुत-सी ऐसी बातें कर सकते है जिनका उनकी पढाई-लिखाई से कोई मेल नही होता। भाई-बहन भी आपस मे हँसी खेल मे समय बिता सकते हैं। घर पर कोई मेहमान आ जाए तो उनसे बात करने मे विद्यार्थी का समय नष्ट हो जाता है। लेकिन सुबह उठने पर इनमे से किसी भी कारण से बच्चो का समय नष्ट नही होता है।

भीम मिट्टी के तेल की ढिबरी से पढता था। उसके घर मे शीशे की चिमनी वाला लप भी नही था। इससे उसकी आँखो पर बहुत जोर पडता था लौ के काले धुंए की कलौस उसकी नाक मे चढ जाती थी। उसने अपने बाल-जीवन की सारी साधना ढिबरी के उसी मन्द और पीले प्रकाश मे पूरी की थी।

भीम के लिए यह बात अकल्पनीय थी कि उसके लिए रईसो जैसा अलग से अध्ययन कक्ष हो। उसका परेल की चाल की गरीब बस्ती मे एक खोलीनुमा कमरा था। उसमें पूरा परिवार रहता था। वही रसोई और वही पूरे परिवार का शयन और अध्ययन कक्ष था।

भीम के लिए यह बात भी नही सोची जा सकती थी कि उसे कोई

ट्यूशन पढाने वाला मास्टर आएगा। खाने पीने तक की तगी मे ट्यूशन के लिए फीस कहाँ से जुटाई जाती ? बस एक यह अच्छी बात रही कि उसके पिता स्वय एक शिक्षक रह चुके थे और उन्होने इसका लाभ अपने बच्चो को दिया।

अध्याय—19

समय का मूल्य

किताव पढने के शौक ने भीम के जीवन की दूसरी वातो को सभाल लिया। सीधा तक था—किताव पढने के लिए उसे समय चाहिए था। इससे उसे अपने समय के मामले मे नियमित होना पडा।

एक दिन उसे महसूस हुआ कि कभी-कभी उसका समय व्यर्थ की वातो मे खराव हो जाता है। इस कारण वह किताव नही पढ पाता है। कई-कई दिन मे एक छोटी किताव खत्म नही हो पाती। इसे उसने अपना निजी नुकसान माना। तव उसने कसम खा कर आदत डाली कि आगे से अपने समय को व्यर्थ की वातो मे नष्ट नही करूँगा।

धन के वारे मे उसने सोचा—यह किसी के पास कम होता है और किसी के पास ज्यादा होता है। कभी-कभी यह किसी के पास विल्कुल भी नही होता। लेकिन समय के वारे मे उसने तुलना करके सोचा—यह सवके पास वरावर होना है इसके लिए उसने एक दिन शान्ति से वैठकर हिसाव लगाया—दिन और रात के कुल चौवीस घण्टे होते है। यह उसने अपनी भूगोल की किताव मे भी पढा था। इस वात से उसे वहुत प्रसन्नता हुई कि समय के वटवारे मे अमीर और गरीव सव वरावर है। उसने सोचा कि समय का सदुपयोग करके वह वडे-वडे धनवानो को पीछे छोड सकता है। उसे सवसे ज्यादा खुशी इस वात की थी कि समय के लिए वह अछूत भी नही था।

उसने लोगो के वारे देखा—वे अपने धन को तो कजूस वन कर वचाने मे लगे रहते हैं पर अपने समय को वेरहमी से वर्वाद करते फिरते है। उन्हे यह पता नही होता कि धन एक वार खोने से दोवारा

मिल सकता है पर गया हुआ समय वापस नही लौटता है। इसलिए भीम ने अपने समय को बहुत मूल्यवान माना। वह आवश्यकता पडने पर समय और धन मे से चुनाव करके दूसरो को अपना धन दे सकता था पर अपना समय नही। वह समय को बचा कर इसका ज्यादा से ज्यादा सदुपयोग किया करता था। इसकी वह कीमियागिरी सीख गया था। यह किमियागिरी रात-दिन पढने-लिखने की थी।

भीम अपने जीवन मे समय को ही सोना और चादी मानने लगा था। वह अपने एक-एक सास का लाभ उठाने लगा था। वह समय को फिजूल की बातो मे नष्ट नही करता था। बडा होकर वह जन सभाओ मे भी सही समय पर पहुँचता था। भीम के भावी जीवन की बुनियाद को मजबूत करने मे समय के इस अनुशासन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अध्याय—20

जीवन की मूलधारा

भीम के जीवन की मूलधारा शिक्षा की थी। बडा होकर वह शिक्षा से शिक्षक के रूप मे भी जुडा था। लेकिन खुद अपने जीवन मे बुढापे तक एक अच्छा शिक्षार्थी बना रहा था। वह हमेशा नई-नई किताबे पढता रहता था।

किताबे उसके जीवन का सगीत कही गई है। वे उसके लिए ओढना और बिछौना थी। उसके कमरे मे उसके चारो ओर किताबे रखी रहती थी। स्टूल पर, कुर्सी पर, मेज पर, अलमारी मे, फर्श पर किताबें रहती थी। आगन्तुको को उसके कमरे मे आने मे सकोच होता था। कुर्सियो पर भी किताबे विराजमान रहने से अतिथि खडे के खडे रह जाते थे।

भीम के लिए शिक्षा शेख चिल्लिया की दुनिया नही थी। वह इसे जीवन और समाज मे जोड कर देखता था। बहुत से लोग ऐसी शिक्षा के पीछे पडे रहते है जिसका मानवता की सेवा और धरती के कल्याण से कोई सबध नही होना है। कई लोग बमतलब की बातो मे विद्वान बन रहते है। उन्हे सच का कुछ भी पता नही होता और इधर-उधर की बातें बना कर बडे बने रहते हैं। लेकिन भीम का ऐसे ज्ञान ध्यान से कुछ लेना-देना नही था। उसके लिए शिक्षा वही थी जो हमारे जीवन को आगे बढाए और समाज मे प्रेम और शान्ति का वातावरण बनाए। वह कोरी और खोखली विद्वता के घमडियो से बहुत चिढता था।

कोरी विद्वता की उन लोगो को जरूरत पडती है जो लोगो के बीच घृणा फैलाना चाहते हैं और जीवन से कट कर विद्वान घोषित होना चाहते ह। उनके अपनी तरह के गलत प्रश्न होते हैं, उनके अपनी तरह के उन गलत प्रश्नो के गलत उत्तर होते हैं। भीम सही प्रश्न उठाता था और वुद्धि के बल पर उसके सही उत्तर पर पहुंचता था।

अध्याय—21

मैट्रिक पास

भीम मैट्रिक के दिनो मे स्कूल की किताबो से बाहर की किताबे पढने लगा था। पाठ्यक्रम से बाहर की पुस्तकें पढने का उसका शौक बहुत बढ गया था। स्कूल के बाद वह चर्नी रोड गार्डन मे जा कर पढता था।

उसने पढने के लिए एक बहुत अच्छी जगह ढूढी थी। वहा पेड की घनी छाया थी। नीचे हरी घास थी। वही एक पत्थर की बनी बेंच पर वह बैठता था। जब उसे धूप की जरूरत पडती थी तो बेंच से थोडी दूर नीचे घास पर चला जाता था।

यह बहुत आराम की जगह थी। उसने प्रकृति के इस खुले आगन को अपने अध्ययन के लिए तपोवन बना दिया था। यहाँ इस बालक की गरीबी मिट जाती थी।

उस बाग मे सिटी हाई स्कूल के हेडमास्टर श्रीकृष्ण जी केलुस्कर भी पढने आया करते थे। उन्होंने भीम को बाग मे लगातार कई दिन देखा। भीम अपनी किताब मे तल्लीन रहता था। उन्होने सोचा कि पढने के मामले मे यह बच्चा उनका छोटा सस्करण सा है। उन्होने भीम से जान-पहचान बढानी चाही।

केलुस्कर जी भीम के पास गए और बोले—"बेटे, माफ करना, मै तुम्हारा ध्यान बँटा रहा हूँ। मैं यह जानना चाह रहा हूँ कि तुम कौन हो?"

अम्बेडकर ने जवाब दिया—"जी, इसमे ध्यान बँटाने की कोई बात नही। मेरा नाम भीम राव अम्बेडकर है। मैं एलफिन्सटन हाई

स्कूल मे पढता हूँ।"

श्री केलुस्कर ने आगे पूछा—"बेटा, यह पूछना अच्छा तो नही है, फिर भी मैं तुमसे पूछना चाह रहा हूँ कि तुम्हारी जाति क्या है ?"

अम्बेडकर ने सोचा कि इस बाग के शान्त वातावरण मे भी जाति का राक्षस उसे अशान्त करने आ गया है। फिर भी पूछे जाने पर उसे जवाब देना था और सच बोलना था। उसने कहा—"महार"।

यह सुन कर केलुस्कर बहुत प्रसन्न हुए। उनके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। उन्होने अम्बेडकर से कहा—"बेटा, मैं तुम से बहुत प्रसन्न हुआ हूँ। महार जाति के बच्चे को इतनी लगन से पढते हुए देख कर मेरा रोम-रोम पुलकित हो रहा है। तुम अपनी लगन को ऐसी ही बनाए रखो। यहाँ रोज पढने आया करना। अपने इस नियम को तोडना मत। मेरा नाम कृष्ण जी केलुस्कर है। मैं सिटी हाई स्कूल का हेड-मास्टर हूँ। मुझसे जो कुछ बन सकेगा तुम्हारी सहायता करूँगा। मैं तुम्हे पढने के लिए अच्छी अच्छी पुस्तकें दिया करूँगा। तुम्हे जो कठिनाई हो मुझे बताया करना। मैं यहा रोज आता हूँ।"

मैट्रिक का परिणाम घोषित हुआ। अम्बेडकर के पास होने पर परिवार मे खुशी की लहर दौड गई। उस बस्ती मे एक अछूत विद्यार्थी का मैट्रिक पास कर लेना मामूली बात नही थी। इससे सारे महार लोग खुश थे। इससे वे सवर्ण हिन्दू भी बहुत खुश हुए जो प्रगतिशील विचारों के थे।

खुशी मे महार जाति के लोगो ने अपने बालक भीमराव का सार्वजनिक रूप से अभिनन्दन करना चाहा। उनके इस विचार को वहा प्रगतिशील हिन्दुओ ने बहुत पसन्द किया। उन्होंने अभिनन्दन समारोह मे सम्मिलित होना चाहा। दोनो वर्गों के सहयोग से पडाल बना कर एक सभा का आयोजन किया गया। यह एक ऐतिहासिक घटना थी।

स्वागत सभा के अध्यक्ष राव बहादुर सीताराम केशव थे। वे उन दिनो महाराष्ट्र मे समाज सुधार का कार्य कर रहे थे। उन्होंने कहा—"अम्बेडकर के मैट्रिक पास करने मे हमारे क्षेत्र मे शिक्षा का एक नया युग आरम्भ हो गया है। इससे सिद्ध होता है कि शिक्षा प्राप्त करने मे महार जाति के बच्चे किसी से पीछे नही है। भीमराव अम्बेडकर के

उदाहरण से दूसरे बच्चो को प्रेरणा लेनी चाहिए।"

इस सभा के वक्ताओ मे थी कृष्णजी केलुस्कर भी थे। वे भीम को पहले से जानते थे। उन्होने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा—"मैं भीमराव को काफी दिनो से जानता हूँ। यह एक मेहनती और तेज विद्यार्थी है। इसे किताब पढने का बहुत शौक है।" अंत मे उन्होने राम जी सूबेदार को उत्साहित करते हुए कहा—"भीमराव की पढाई के लिए हमे भीमराव के पिताश्री सूबेदार राम जी सकपाल को विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहिए। मैं उनसे अनुरोध करता हूँ कि वे आगे भीमराव को इण्टर मे अवश्य दाखिला दिलाएँ।"

बालक भीमराव सभा का मुख्य आकर्षण था। उसके गले मे सुगंधित गदा और गुलाबो की फूलमालाएँ डाली जा रही थी। कुछ लोगो ने जूही और चमेली के फूलो की मालाएँ पहनाई थी। भीम सोच रहा था कि वह एक बालक ही तो है। उसकी बडे-बूढे लोग प्रशसा कर रहे थे। वह बहुत खुश था। वह सब कुछ चुप होकर देख रहा था।

इस अवसर पर श्री कृष्णजी केलुस्कर ने भीमराव को अपनी लिखी "बुद्ध चरित्र" नाम की पुस्तक की एक प्रति भेट की। बाद मे चल कर यह पुस्तक उसके जीवन मे एक क्रांतिकारी पुस्तक सिद्ध हुई।

अध्याय—22

रमा के साथ विवाह

उस समय छोटे बच्चो की शादी कर दी जाती थी। उन्हे अपने विवाह के बारे मे कुछ भी पता नही होता था। सब कुछ मा बाप पर निभर था। माँ-बाप भी अपने जान-पहचान वाले और रिश्तेदारो पर भरोसा करते थे। उन्हे बिचौलिया कहा जाता था। सच मे वे भी लडके और लडकी को नही देखते थे। कुल मिलाकर लडका और लडकी एक-दूसरे को नही जानते थे। उनके मा-बाप एक-दूसरे को नही जानते थे। बिचौलिए लडके और लडकी को नही जानते थे। पूरी शादी मे लडके की पूछ बारात के लिए और लडकी की जरूरत फेरो के समय पडती थी।

बालक भीम ने मैट्रिक पास कर लिया। मैट्रिक पास करने के पहले मे ही रामजी सूबेदार को उसके विवाह की सोचनी पड रही थी। बिरादरी के लोग उसके रिश्ते को लेकर सूबेदार को परेशान कर रहे थे। वह सोलह वष का हो गया था। इतना बडा लडका अनब्याहा फिरता है। अडोस-पडोस के औरत मद व्यग्य करते थे—"क्या सूबेदार भीम को बुड्ढा बनाकर उसकी शादी करेगे?"

भीम की शादी के लिए रिश्ते पर रिश्ते आ रहे थे लेकिन इस मामले मे सूबेदार लीक से हटकर चल रहे थे। उन्होने लडकी देखने का काम बिचौलियो पर नही छोड रखा था। वे स्वय जाकर लडकी को और उसके घर वालो को देखते थे।

अब तक वे कई रिश्ते देख चुके थे पर उन्हे कोई रिश्ता पसन्द नही आया था। इस व्यवहार पर समाज के लोग रामजी सूबेदार को

घमण्डी कहने लगे थे।

एक दिन दबाव मे आकर उन्होंने एक रिश्ता जल्दबाजी म स्वीकार कर लिया। शादी से पहले की सगाई की रस्म पूरी कर दी गई। बात पक्की हो गई।

रिश्ता तो हो गया पर सूबेदार का मन नही मान रहा था। उन्हे लग रहा था कि भीम के लिए रिश्ता चुनने मे उनसे चूक हो गई है।

उन्होने एक लडकी और देखी, सयोग मे यह लडकी पहली लडकी से बहुत सुन्दर थी। यह सभ्य, सुशील और सुन्दर थी। इसका स्वभाव शात प्रकृति का था।

वैसे इस लडकी का घर गरीब था। इसके माता-पिता मर चुके थे। इसकी दो बहने और एक छोटा भाई था। ये बच्चे अपने मामा और चाचा के पास बम्बई मे रह रहे थे। इनके स्वर्गवासी पिता का नाम भिक्खु वलॉगकर था। लडकी का नाम रामी बाई था। उस समय वह नौ साल की थी। उसके पिता दापोली के रहने वाले थे।

रामजी सूबेदार ने इस बारे मे बहुत सोचा। उन्हे अपने होनहार बेटे के भविष्य की चिन्ता थी। वे जानते थे कि यदि भीम को अच्छी पत्नी नही मिली तो उसका जीवन नष्ट हो सकता है। यह सोचकर सूबेदार ने भीम की पहली सगाई तोड दी और इस गरीब लडकी से सगाई कर दी।

इस पर पहली लडकी के पिता बहुत बिगड बैठे। उन्होंने रामजी सूबेदार से इसका बदला लेने की ठान ली। वे इस मामले को बिरादरी की पचायत मे ले गए।

तब लोग बिरादरी की पचायत से बहुत डरते थे। पचायत की बात सबको माननी पडती थी। पचायत से बडा कोई नही था।

पचायत बैठ गई। हुक्के भरे जाने लगे। चौधरियो के मुँह मे गुडड-गुड्ड धुँए निकलने लगे।

पचायत ने रामजी सूबेदार को खडा किया। उनसे कई प्रश्न किए। रामजी सूबेदार अपने लडके भीमराव की शादी के लिए रिश्ता पक्का करके उसे तोडने के दोषी पाए गए। पचो ने आदेश दिया—"रामजी सूबेदार पहले रिश्ते को ही माने।'

राम जी सूबेदार ने पचो के सामने हाथ जोड कर कहा—'पर,

मै अपने भीमराव के लिए पहला रिश्ता स्वीकार नहीं कर पाऊँगा। मुझे क्षमा करें।'

पचो के सूबेदार की इस हुक्म अदूली का बहुत बुरा माना और इसे पचायत का अपमान बताया। उन्होंने रामजी सूबेदार पर दंड सुनाया—"चूकि राम जी सूबेदार पचायत का फैसला नहीं मान रहे हैं इसलिए उन्हें पाच रुपये का जुर्माना दिया जाता है।"

राम जी सूबेदार के लिए अब कोई चारा नहीं था। उन्हे पचायत के पाच रुपये का जुर्माना भरना पड़ा।

सूबेदार ने एक पिता के रूप मे यह भीमराव की सबसे बडी सहायता की थी। पचायत की न मानकर उन्होंने अपने बेटे के जीवन को एक बडे सकट से बचा लिया था। उन्होंने प्राचीन यूनान के सुकरात की कहानी पढ रखी थी कि सुकरात की पत्नी बहुत बुरी थी। उन्होने अमरीका के अब्राहम लिंकन की जीवनी मे पढा था कि उनकी पत्नी उन्हे तमाम जिन्दगी दुख देती रही। उन्हे रूस के टालस्टाय के बारे मे भी पता था कि बुरी पत्नी के कारण उन पर कैसी गुजरी थी। इसलिए उन्होने एक अच्छे पिता की तरह अपने बेटे के रास्ते मे आने वाले इस काटे को अपने ऊपर जख्म खाकर तोड दिया था।

शादी के मामले मे सूबेदार को बिरादरी के कई लोगो ने उकसाने के लिए कहा—"शादी रोज-रोज नहीं होती। किसी की जिन्दगी मे केवल एक बार होती है। इसलिए भीम की शादी धूमधाम से होनी चाहिए।

उनके कई निकट के रिश्तेदारो ने कहा—"सूबेदार, यह हमारी और तुम्हारी नाक का मामला है। पहला रिश्ता छोडा गया है। उसके जवाब मे यह शादी टक्कर की होनी चाहिए।"

लोगों ने कहा—"शादी एक सस्कार होती है। इसका तमाम जिन्दगी पर असर पडता है। इसके लिए खर्च मे कमी नहीं करनी चाहिए।"

सूबेदार अपनी आर्थिक स्थिति को अच्छी तरह जानते थे। उन्हे यह भी पता था कि उनका भीम किताब खरीदने का बहुत शौकीन है। इसलिए वे किसी के बहकाने मे नहीं आए। उन्होंने ऐसा नहीं

किया कि वे शादी के लिए कर्ज लेकर मूर्खों की तरह बाल-बाल बिंध जाते और उनका भीम पढ़ाई से रह जाता। इसलिए उन्होंने सबकी सुनी और कानों से निकाल दी।

सूबेदार ने अपना तर्क रखा कि शादी संस्कार है तो यह सम्पन्न हो जाएगा। इसमें धन लगाने की क्या जरूरत है? आखिर वे अपने बेटे को शिक्षा का संस्कार दिलवा रहे है। यह धरती पर सबसे बड़ा संस्कार है। उन्होंने यह भी दिमाग लगाया कि ब्राह्मणों ने अछूतों की शिक्षा का संस्कार रोका है पर उन्होंने उनके शादी करने पर पाबन्दी नहीं लगाई है। इसका कुछ अर्थ है। इसमें जरूर कुछ छिपा हुआ है।

सूबेदार ने किसी की न मानी और भीम की शादी सीधे सादे ढंग से की। यह शादी भायखला मार्केट के खुले शेड में की गई। शाम को बाजार बन्द होने के बाद उसके रास्ते की खुली जगह को घेर लिया गया था। रास्ते के एक तरफ भीम राव अपनी बारात के साथ दुल्हे बने बैठे थे और बाजार के दूसरे कोने पर वधू और उसके रिश्तेदार थे। न कोई मेज थी, न कोई कुर्सी थी। दुकानदारों के फट्टे और ठिए ही बेन्चों का काम दे रहे थे।

फेरों के समय वधू का नाम रामी बाई से बदल कर रमा बाई कर दिया गया। सुबह बाजार में जब मछुआरे अपनी मछली बेचने आने लगे तो शादी की शेष सभी रस्मे पूरी करा कर बराती अपने-अपने घर चले गए। रमा बाई भीम के घर आ गई। जीवन का एक पवित्र त्यौहार पूरा हो गया।

बी ए मे दाखिला

अब बालक अम्बेडकर ने इन्टर की परीक्षा पास कर ली थी। घर मे यह खुशी का समय था। राम जी सूबेदार की खुशी का ठिकाना ही नहीं था। वे बाजार से उस तगी मे भी कई रुपए के पेडे खरीद लाए थे। पेडे बाट-बाट कर सबसे बताते फिर रहे थे कि भीम ने इन्टर पास कर लिया है।

उस समय रामजी सूबेदार को जितनी खुशी थी उससे ज्यादा उन्हे एक चिता खा रही थी। वे सोच रहे थे कि इन्टर के बाद अब भीम की पढाई के लिए क्या किया जाए। उनके पास भीम को आगे पढाने के लिए पैसे नही थे।

वे कहे तो किससे कहे? इतना धन कहा से आएगा? उनकी इस समय कौन सहायता करेगा? व अपनी गरीबी को देखकर खुद को कोसने लगे—"हाय रे दुर्भाग्य, मेरा बच्चा बी ए नही कर पाएगा।"

इस समय श्री कृष्णजी केलुस्कर भीम के इन्टर पास करने की बधाई देने उनके घर आए। वहाँ सूबेदार को चिताग्रस्त देखकर उन्हे अपने एक पुराने प्रण की याद आई। उन्होने भीम के हाई स्कूल पास करने पर सूबेदार से कहा था—"सूबेदारजी, आप भीम को इन्टर मे दाखिला दिलाओ। हिम्मत करो और थोडा कष्ट और उठाओ। घबराओ मत, इन्टर के बाद आगे देखा जाएगा। तब मैं भी कुछ सहायता करने की कोशिश करूँगा।"

आज वह सहायता का समय आ पहुँचा था। श्री कृष्ण जी केलुस्कर को तभी बडौदा के महाराजा सताजीराव गायकवाड की

याद आई। उस समय महाराजा बम्बई मे आए हुए थे।

बडौदा के महाराजा सयाजीराव शिक्षा से बहुत प्यार करते थे। वे विशेषकर अछूतो मे शिक्षा का प्रसार करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने बम्बई के टाउन हाल की एक जन सभा में घोषणा की थी— "यदि कोई अछूत विद्यार्थी बहुत बुद्धिमान हो तो मैं उसकी उच्च शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता करूँगा।"

श्री केलुस्कर ठीक समय अम्बेडकर को महाराज के पास ले गए। उन्होंने महाराजा को बताया—"भीमराव एक होनहार अछूत विद्यार्थी है। यह जिन्दगी मे जरूर कोई महान काम करेगा। मेरा निवेदन है कि आप अपनी घोषणा के अनुसार इसकी सहायता करने की कृपा करें।" साथ मे श्री केलुस्कर ने यह भी कहा—इसके लिए मैं आपका व्यक्तिगत रूप से आभारी रहूँगा।" इस समय श्री केलुस्कर अम्बेडकर के लिए दूसरे पिता बन गए थे।

महाराजा ने अम्बेडकर को अपने निकट बुलाया। उन्होने अम्बेडकर से पूछा—"युवक, तुम आगे क्यो पढना चाहते हो?" अम्बेडकर ने नम्रतापूर्वक जवाब दिया—"मै अपनी कौम के अछूतपन के कलक को मिटाना चाहता हूँ।"

यह सुनकर महाराजा बहुत खुश हुए। उन्होने खडे होकर अम्बेडकर की पीठ थपथपाई। अन्त में आशीर्वाद देते हुए कहा— "बेटा, इस काम को अपने जीवन का मिशन बना लो।" इस पर अम्बेडकर ने बडे आदर से कहा—"महामहिम, यह मेरे जीवन का मिशन बन चुका है।"

महाराजा ने इन उत्तरो से प्रभावित होकर अम्बेडकर के लिए पच्चीस रुपए महीने की छात्रवृत्ति स्वीकृत कर दी। महाराजा अम्बेडकर के लिए तीसरे पिता बन गए थे। उस दिन भारत का इतिहास महाराजा का ऋणी हो गया था।

इस उपकार के लिए रामजी सूबेदार ने श्री कृष्णजी केलुस्कर को बहुत धन्यवाद दिए। धन्यवाद देते समय उनकी आखो से खुशी के आसू छलक रहे थे। यह कोई छोटी बात नही थी—अब उनका बेटा बी ए पास कर जाएगा।

इस लगन को देख कर उस कालेज के अंग्रेजी के प्रोफेसर म्यूल्लर उससे बहुत प्रेम करते थे। वे उसे पढ़ने के लिए अच्छी अच्छी पुस्तकें देते थे। वे उसे कभी-कभी कपड़े भी दे देते थे। फारसी के प्रोफेसर के० बी० ईराणी भी अम्बेडकर को बहुत चाहते थे। उन्होंने भीमराव को अपना कमरा पढ़ने के लिए दे दिया था।

इन दो प्रोफेसरों को छोड़कर बाकी सारे प्रोफेसर और विद्यार्थी अम्बेडकर से घृणा करते थे।

देश की राजनीति में आने के बाद उसने ऐसे सभी होटलों को कानून बनवाकर बन्द करवा दिया जो अछूतों के साथ छुआछूत बरतते थे।

अध्याय—25

पिता का देहान्त

1912 मे अम्बेडकर ने बी० ए० पास कर लिया था। यह उसके जीवन की बडी प्राप्ति थी। तब ब्राह्मणो मे भी बी० ए० पास लोग कम मिलते थे। फिर उस समय एक अछूत का ग्रेजुएट हो जाना एक अनहोनी घटना थी। अम्बेडकर बी० ए० के रूप मे सारे अछूत समाज का गौरव बन गया था।

अब अम्बेडकर के सामने नौकरी की बात थी। महाराजा बडौदा द्वारा किए गए उपकार की बात सोचकर अम्बेडकर ने बडौदा की रियासत मे नौकरी करनी चाही।

रामजी सूबेदार चाहते थे कि भीम राव बम्बई मे नौकरी करे। उन्हे एहसास था कि बडौदा की रियासत मे अम्बेडकर सुखी नही रहेगा। उन्हे पता था कि देशी रियासतो के समाज मे बहुत छुआछूत बरती जाती है। उन्होने अम्बेडकर से कहा—"बेटा, रियासत की नौकरी करना ठीक नही है। वहाँ का सामाजिक माहौल बहुत खराब होता है। वहा छुआछूत हद दर्जे पर बरती जाती है। उस वातावरण मे तुम कैसे रहोगे?"

भीम ने कहा—"पिताजी, बडौदा रियासत के महाराजा सयाजीराव गायकवाड हैं। वे प्रगतिशील विचारो के है। उनकी रियासत अंग्रेजो के राज्य से अच्छी है।"

रामजी सूबेदार ने कहा—"यह ठीक है कि वहा के महाराजा नए विचारो के है। लेकिन वहाँ की प्रजा नए विचारो की नही है। वह प्रजा छुआछूत के मामले मे बेहद कट्टर है।"



भीम ने कहा—"पिताजी, छुआछूत हिन्दुस्तान मे कहाँ नही है ? यह सब जगह एक-सी फैली है। मैंने इसे बम्बई के विश्वविद्यालय मे भी भुगता है। फिर महाराजा गायकवाड ने मेरी आर्थिक सहायता की है। मुझे उनके इस एहसान को कुछ तो उतारना चाहिए। उनकी हम पर बडी कृपा रही है।"

रामजी सूबेदार ने बेटे के सामने मन मारकर कहा—"बेटे, जैसी तेरी मर्जी वैसा कर, पर मेरा मन तुझे बडौदा जाने की गवाही नही दे रहा है।"

इस बारे म पिताजी और पुत्र मे काफी बहस हुई। कुछ दिनो तक दोनो की आपस मे नाराजगी भी रही। अन्त मे पिता को पुत्र के निश्चय के सामने चुप रहना पडा। अम्बेडकर अपने पिता की न मानकर बडौदा रियासत में नौकरी करने चला गया। वहाँ उसे फौज मे लेफ्टिनेन्ट का पद मिला।

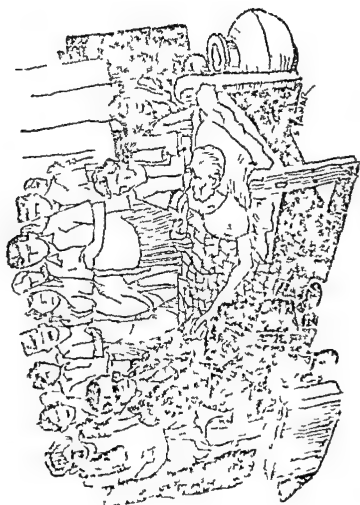
अभी नौकरी के 15 दिन पूरे हुए थे कि अम्बेडकर को बम्बई से तार मिला कि उसके पिता सख्त बीमार ह। वह बहुत परेशान हो गया। रियासत से 8 दिन की छुट्टी ली। तुरन्त बम्बई के लिए रवाना हुआ।

रास्ते मे गाडी सूरत स्टेशन पर रुकी। अम्बेडकर को याद आया कि पिताजी बर्फियो के बहुत शौकीन हैं। वह बर्फी लेने के लिए गाडी से नीचे उतर गया।

बर्फी खरीदते समय उसे पता भी नही चला कि कब उसकी गाडी निकल गई। वह हक्का-बक्का प्लेटफार्म पर खडा रह गया। अब क्या करे ? उस रात उसे वही स्टेशन पर रुकना पडा। वह अगले ही दिन दूसरी गाडी से बम्बई जा सका।

घर पर देखा तो लोगो की भीड लगी थी। परिवार के लोग चिंताग्रस्त खडे थे। रामजी सूबेदार मरणोन्मुख अवस्था मे मृत्यु शय्या पर पडे थे।

सूबेदार की आँखो ने अपने लाडले भीम को देखा। उन्हे इस बात का मन मे भारी सन्तोष था कि उन्होने अपने भीम को एक उमग और उत्साह मे पाला था और उसे जीवन का एक योद्धा बनाकर तैयार किया था। अतिम समय मे उनके नयनो से स्नेह और वात्सल्य के आसू छलक पडे। भाव अतिरेक से हृदय गद्‌गद हो गया।



भीम अपने पिता को इस हालत में देखकर रो पडा। पिता ने सकेत मे कहा कि बहादुर बेटे रोया नही करते, तुम एक सिपाही के सिपाही बेटे हो।

एक बार फिर राम जी सूबेदार ने अपने वात्सल्य के हाथ भीम की पीठ पर थपथपाए। वे लेटे-लेटे भीम को निहार रहे थे। भीम उनके जीवन का साकार होने वाला सपना है। भीम उनके जीवन की सबसे सुन्दर कल्पना है। इन्ही सुन्दर विचारो का ध्यान करते हुए राम जी सूबेदार चल बसे।

भीम का कण्ठ रुध गया। उसका पिता, उसका गुरु, उसका मसीहा चला गया था। उसने उनसे सयम और धैर्य के पाठ पढे थे। उसने उनसे परिश्रम और सादगी का आचार ग्रहण किया था। सबसे बढकर उसने उनसे अछूतपन के कलक का मिटाने का एक महान उद्देश्य धरोहर के रूप मे प्राप्त किया था। पिता ही पुत्र मे जाज्वल्यमान था। पिता ही पुत्र में समा गया था।

□□

सहायक साहित्य

1 अम्बेडकर जीवन दर्शन, डी० आर० निम, विद्या विहार, *1685 कूचा दखनी राम, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002, प्रथम* संस्करण, 1986

2 अम्बेडकर लाइफ एण्ड मिशन, डी० कीर, पोपुलर प्रकाशन प्रा० लि०, 35 सी, मदन मोहन मालवीय मार्ग, बम्बई, थर्ड एडिशन, रिप्रिन्ट, 1981

3 *डॉ० अम्बेडकर जीवन और दर्शन, डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर,* किताब घर, मेन रोड, गांधी नगर, दिल्ली-*110031*, संस्करण *1986*

4 डॉ० बाबा साहेब अम्बेडकर जीवन दर्शन, विजय कुमार पुजारी भारतीय बौद्ध महा सभा, दिल्ली प्रदेश, बुद्ध विहार, अम्बेडकर भवर, नई दिल्ली 110055, द्वितीय संस्करण, 1984

5 डॉ० बी०आर० अम्बेडकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व, डॉ० डी० आर० जाटव ममता साहित्य सदन, 40 मीना कालोनी, इमली वाला फाटक, जयपुर, राजस्थान 302 005